o"kZ & 2009

1- Pkhpk M.Mh vjk [kh%jh एवं [knnh pUnk पुस्तक का *तोलोङ सिकि* में लिप्यन्तरण तथा सत्यभारती राँची, द्वारा प्रकाषन, जो डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', फा0 अगस्तिन केरकेट्टा एवं लूरडिप्पा स्कूल के संचालकों यथा श्री अगस्तिन बखला एवं श्री बिनोद भगत सहित *कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूरएड़पा भगीटोली, डुमरी* के षिक्षकों के कड़ी मेहनत का प्रतिफल है।

फा0 अगस्तिन केरकेट्टा (बाएँ) एवं डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' (दायें)
जिनकी कड़ी मेहनत से Pkhpk M.Mh vjk [kh%jh एवं [knnh pUnk
पुस्तक का *तोलोङ सिकि* में लिप्यन्तरण संभव हुआ।

2. झारखण्ड अधिविद्य परिषद द्वारा okf"kZd ek/;fed ijh{kk 2009 के dqM+[k Hkk"kk i= को अपनी लिपि *तोलोंग सिकि* में परीक्षा लिखने हेतु Áस foKfIr la[;k 17@2009 fnukad 19-02-2009 द्वारा अनुमति प्रदान किया गया।

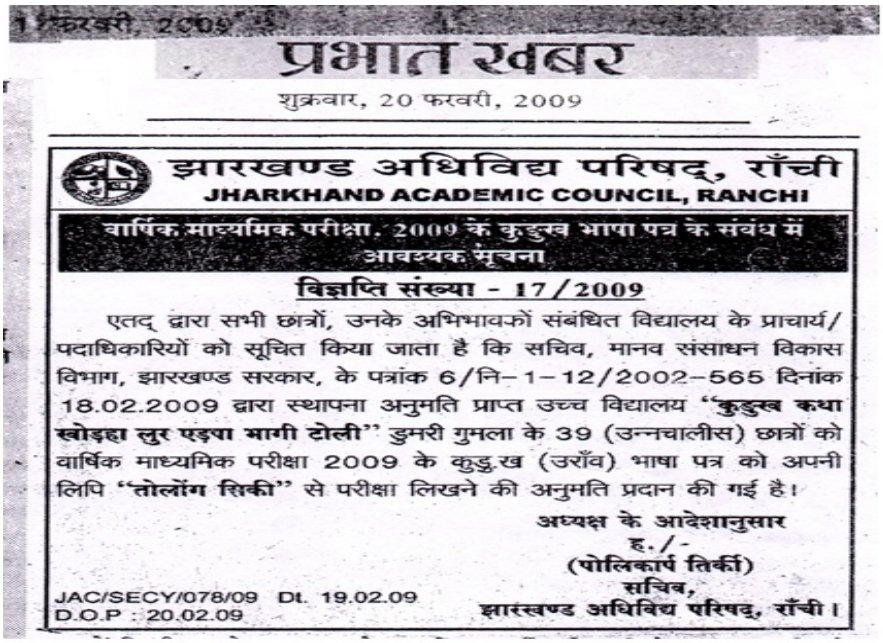

1 फरवरी 2009

प्रभात खबर

शुक्रवार, 20 फरवरी, 2009

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची
JHARKHAND ACADEMIC COUNCIL, RANCHI

वार्षिक माध्यमिक परीक्षा, 2009 के कुड़ुख भाषा पत्र के संबंध में आवश्यक सूचना

विज्ञप्ति संख्या - 17/2009

एतद् द्वारा सभी छात्रों, उनके अभिभावकों संबंधित विद्यालय के प्राचार्य/पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि सचिव, मानव संसाधन विकास विभाग, झारखण्ड सरकार, के पत्रांक 6/नि-1-12/2002-565 दिनांक 18.02.2009 द्वारा स्थापना अनुमति प्राप्त उच्च विद्यालय **"कुड़ुख कथा खोड़हा लुर एड़पा भागी टोली"** डुमरी गुमला के 39 (उन्नचालीस) छात्रों को वार्षिक माध्यमिक परीक्षा 2009 के कुड़ुख (उराँव) भाषा पत्र को अपनी लिपि **"तोलोंग सिकी"** से परीक्षा लिखने की अनुमति प्रदान की गई है।

अध्यक्ष के आदेशानुसार
ह./-
(पोलिकार्प तिर्की)
सचिव,
झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

JAC/SECY/078/09 Dt. 19.02.09
D.O.P : 20.02.09

3. अंगरेजी माध्यम स्कूल dqM+[k dRFk [kksM+gk yw j,M+ik] yw jfMIik] HkxhVksyh] Mqejh ¼xqeyk½ के 39 छात्रों द्वारा मैट्रिक में कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा *तोलोंग सिकि* में लिखा गया तथा वे हिन्दी एवं अन्य विषयों में भी अच्छे अंक प्राप्त किये।

4. कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया का चौथा राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 11–14 अक्टूबर 2009 को रायपुर, छत्तीसगढ़ में सम्पन्न तथा *तोलोंग सिकि* पर परिचर्चा।

o"k & 2010

1. Rkkyk³ flfd fnol] 20 फरवरी 2010 को सत्य भारती, राँची में ऑग्जीलरी विषप श्री विनय कण्डुलना, डॉ0 लक्ष्मण उराँव, डॉ0 नारायण भगत, ई0 अजित मनोहर खलखो, फा0 अगस्तिन केरकेट्टा डॉ0 नारायण उराँव तथा रिम्स, राँची के छात्र–छात्राओं की उपस्थिति में मनाया जाना। इस अवसर पर Rkkyk³ flfd MkV dke नामक वेवसाइट का षुभारंभ हुआ। यह वेबसाइट, श्री किसलय के सहयोग से तैयार हुआ है।

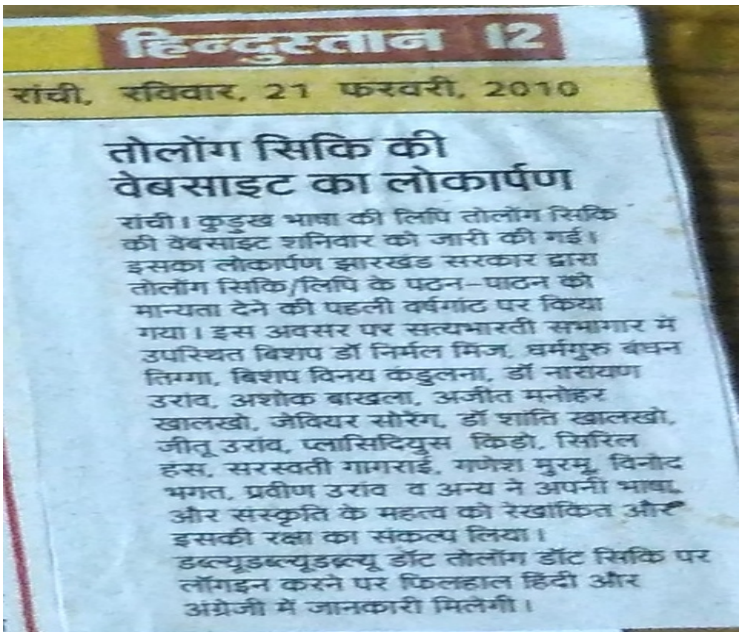

हिन्दुस्तान 12

रांची, रविवार, 21 फरवरी, 2010

तोलोंग सिकि की वेबसाइट का लोकार्पण

रांची। कुड़ुख भाषा की लिपि तोलोंग सिकि की वेबसाइट शनिवार को जारी की गई। इसका लोकार्पण झारखंड सरकार द्वारा तोलोंग सिकि/लिपि के पठन–पाठन को मान्यता देने की पहली वर्षगांठ पर किया गया। इस अवसर पर सत्यभारती सभागार में उपस्थित बिशप डॉ निर्मल मिंज, धर्मगुरु बंधन तिग्गा, बिशप विनय कंडुलना, डॉ नारायण उरांव, अशोक बाखला, अजीत मनोहर खालखो, जेवियर सोरेंग, डॉ शांति खालखो, जीतू उरांव, प्लासिदियुस किंडो, सिरिल हंस, सरस्वती गागराई, गणेश मुरमू, विनोद भगत, प्रवीण उरांव व अन्य ने अपनी भाषा और संस्कृति के महत्व को रेखांकित और इसकी रक्षा का संकल्प लिया।

डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डॉट तोलोंग डॉट सिकि पर लॉगइन करने पर फिलहाल हिंदी और अंग्रेजी में जानकारी मिलेगी।

2- dqM+[k Hkk"kk dh ikfjHkkf"kd 'kCnkoyh ,oa 0;kdj.k विषय पर XISS राँची में 11 दिसम्बर 2010 को सेमिनार सम्पन्न हुआ तथा सेमिनार में लिए गये निर्णय के आधार पर व्याकरण तैयार करने की दिषा में कार्य आरंभ हुआ।

3. dqM+[k fyVjjh lkslk;Vh vkQ bafM;k का 5वाँ राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 22—44 अक्टूबर 2010 को ckxbZxkWo] vle में सम्पन्न हुई, जहाँ भाषा प्रेमियों ने *तोलोंग सिकि* पर परिचर्चा की।

4. uohu Mkeu fFk;ksykWftdy dkWyst] eykj] ईटकी मोड़, राँची में वर्ष 2010 से *विषप डॉ0 निर्मल मिंज* के नेतृत्व में कुँड़ुख भाषा एवं लिपि (तोलोंग सिकि) की पढ़ाई आरंभ।

5. दिनांक 25 एवं 26 नवम्बर 2010 को जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली एवं राँची विष्वविद्यालय, राँची के संयुक्त तत्वधान में ^ledkyhu cnyrs lekt esa ekrHkk"kkvksa dh Hkwfedk* विषयक संगोष्ठी संपन्न हुई। इस संगोष्ठी में तोलोंग सिकि बींड़ना बिड़हा की ओर से फादर अगस्तिन केरकेट्टा एवं डॉ0 नारायण उराँव, साहित्य अकादमी के प्रतिनिधियों से मिलकर कुँड़ुख़ भाषा एवं लिपि के संबंध में बातें रखीं।

6. डॉ0 नारायण उराँव द्वारा lkfgR; vdkneh ds ifrfuf/k;ksa ls tutkrh; Hkk"kk&lkfgR; ,oa fyfi ds fodkl gsrq] साहित्य लेखन एवं प्रकाषन में मदद करने की अपील की गई। इस अपील पर साहित्य अकादमी के प्रतिनिधियों ने कहा कि साहित्य अकादमी के द्वारा उसी भाषा पर कार्य किया जाता है जो संविधान की 8वीं अनुसूची में षामिल है। साहित्य अकादमी की ओर से, गैर अनुसूचित भाषा के लिए काम करने में काफी कठिनाई है।

o"kZ & 2011

1. दिनांक 06 जनवरी 2011 को अखिल भारतीय तोलोंग सिकि बींड़ना बिड़हा का नाम बदलकर अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा रखा गया।

2. दिनांक 10 जनवरी 2011 को iMgk xq: Lo0 fHk[kjke Hkxr की 74 oha t;Urh के अवसर पर बलीजोड़ी, राउरकेला, ओड़िसा में श्री मंगला खलखो की अगुवाई में *तोलोंग सिकि* को *कुँड़ुख़ भाषा की लिपि* के रूप में समर्थन तथा *डॉ0 नारायण उराँव* द्वारा पड़हा प्रेमियों के बीच भाषा *तोलोंग सिकि* का वैज्ञानिक दृष्टिकोण की प्रस्तुति की गई।

3. Rkksyksx flfd fnol] 20 फरवरी 2011 को झारखण्ड जनजातीय कल्याण षोध संस्थान, राँची के सभागार में, विनोबा भावे विष्वविद्यालय, हजारीबाग के dqyifr MkW0 jfoUnz ukFk Hkxr] पूर्व कुलपति MkW0 foDVj frXxk एवं महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड के तत्कालीन सलाहकार MkW0 Ádk'k pUnz mjkWo की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

झारखंड न्यूजलाइन 5

तोलोंग सिकिः दिवस 20 को

कुड़ुख भाषा की लिपि है तोलोंग सिकि :, जनक हैं डॉ नारायण उरांव सैंदा, अब तक उपेक्षा का शिकार, नहीं होती प्राइमरी स्कूलों में पढ़ाई, झारखंड सरकार ने 2009 में मान्यता दी, हाईस्कूलों में पिछले साल कुछ शिक्षकों की हुई बहाली.

कोरनेलियुस मिंज

रांची : जनजातीय भाषा के विकास को लेकर सरकार भले ही चिंतित न हो, लेकिन बुद्धिजीवी इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं. उनका मानना है कि जिस समुदाय की भाषा विलुप्त हो जाती है, तो समुदाय का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है. भाषा से संस्कृति भी बची रहती है. झारखंड के जनजातियों की भाषा आज भी उपेक्षा का शिकार है. भाषाओं को बचाने के लिए लिपि का भी आविष्कार किया जाने लगा है. जनजातीय भाषा में संताली व हो भाषा की अपनी लिपि बनायी गयी है.

तोलोंग सिकि : एक परिचय

कुड़ुख समुदाय ने इस लिपि को अपनी भाषा की लिपि मान लिया है. इसके जनक हैं डॉ नारायण उरांव सैंदा.उन्होंने 1989 में लिपि बनाने की शुरुआत की थी. 1995 में लिपि बनकर तैयार हुई. समाज के सामने रख दिया. तोलोंग सिकिः को 2001 में कंप्यूटरीकृत किया गया. कार्डिनल तेलेस्फोर पी टोप्पो ने लॉन्च किया था. 2009 में तोलोंग सिकिः को झारखंड सरकार ने मान्यता दी. 2003 में राजनीतिक रूप से मान्यता मिली थी. छत्तीसगढ़ में भी तोलोंग सिकिः को कुड़ुख भाषा लिपि के रूप में मान्यता दिलाने की कोशिश हो रही है. फरवरी 2010 में इसका वेबसाइट का लॉन्च हुआ. झारखंड का एकमात्र स्कूल है लूरडिपा, जहां के बच्चे तोलोंग सिकिः लिपि में परीक्षा देते हैं. इस भाषा की पढ़ाई के लिए पिछले साल कुछ शिक्षकों की हुई बहाली. झारखंड माध्यमिक शिक्षा परिषद, रांची ने विज्ञप्ति संख्या 23, 2001 दिनांक 20 जून 2001 को अधिसूचना जारी कर क्षेत्रीय भाषा को शामिल किया. तोलोंग सिकिः बनाने में रांची विश्वविद्यालय रांची, टीआरआई, सत्य भारती के विद्वानों का योगदान रहा. ट्रैस संस्था के बैनर तले लिपि बनी. 20 फरवरी को लिपि को मान्यता मिली थी. इसीलिए तोलोंग सिकिः दिवस 20 फरवरी को मनाया जाता है.

लिपि निर्माता का परिचय

डॉ नारायण उरांव गांव सैंदा, पो. करकरी, ब्लॉक सिसई थाना गुमला के निवासी हैं. संत तुलसीदास उच्च विद्यालय सिसई से मैट्रिक की परीक्षा दी. आरसी मिशन स्कूल सैंदा से प्रारंभिक शिक्षा पूरी की. रांची कॉलेज से आईएससी, दरभंगा मेडिकल कॉलेज से मेडिकल की पढ़ाई पूरी की. पेशे से डॉक्टर, लेकिन समाज के लोगों की पीड़ा ने इस काम को करने के लिए प्रेरित किया. फिलहाल रिम्स के शिशु रोग विभाग में कार्यरत हैं.

4. dqM+[k fyVjsjh lkslk;Vh vkQ bf.M;k का 6वाँ राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 22–24 अक्टूबर 2011 को रोहतासगढ़, बिहार में सम्पन्न तथा *तोलोंग सिकि* पर परिचर्चा।

5. rksyksax flfd में लिखते समय अधिक जगह लेने संबंधी प्रष्नों पर Áks0 Mks0 djek mjkao का कहना है कि यह लिपि सरसरी तौर पर बड़ा–बड़ा लिखावट वाला नजर आता है। इस लिपि की कई अच्छाईयों के वावजूद यदि लिखने और समझने की सुविधा को ध्यान में रखते हुए, कम जगह लेने वाला हो तो, इस विन्दु पर संशोधन किया जाना चाहिए। इस विन्दु पर आई0आई0टी0, मुम्बई में भी प्रश्न उठा। आई0आई0टी0, मुम्बई में मास्टर इन डिजाईन सह ईन्डस्ट्रीयल फॉन्ट डिजाईन के छात्र Jh [kk[kk veu :i'k द्वारा बतलाया गया कि फॉन्ट डिजाईनर अधिक जगह लेने की स्थिति पर सुधार चाहते हैं। *पूर्व में* डॉ0 बहुरा एक्का ने सुझाव दिया था कि मूल वर्ण के उपर या नीचे dia critical mark देकर इस समस्या का समाधान निकाला जाना चाहिए। Jh [kk[kk veu :i'k ने डॉ0 नारायण उराँव के सुझाव पर सहमति देते हुए, स्पष्ट किया कि समान वर्णो के संयुक्ताक्षर के लिए मूल वर्ण के उपर dia critical mark देकर लिखे जाने से स्थान बचेगा।

6. Mk0 ¼Jherh½ T;ksfr VksIiks ने सुझाव दिया कि *तोलोंग सिकि* एवं *रोमन लिपि* के बीच लिप्यन्तरण करने में vk के लिए *रोमन लिपि* का मूल वर्ण उपर लकीर यानि ạ की तरह dia critical mark दिया जाना चाहिए। *रोमन लिपि* के मूल स्वर वर्णों के उपर curved mark देकर nasal vowel तथा bar mark देकर आ लिखने की परम्परा है।

7. fgUnh d lkfgR;dkj MkW0 fnus'oj Álkn ने सुझाव दिया कि *देवनागरी लिपि* से कुँड़ुख़ भाषा के दिगहा सरह ध्वनियों को लिखते समय *देवनागरी लिपि* के मूल स्वर वर्णों के दाहिनी ओर dia critical mark उप विराम (॰) चिह्न देकर लिखे जाने में साहित्य की प्रवाह बढ़ेगी।

8. ;qok] lLdfr ,o [ksy e=ky;] >kj[k.M ljdkj द्वारा दिनांक 28 अक्टूबर 2011 को डॉ0 नारायण उराँव को कुँड़ुख़ भाषा के लिए तोलोंग सिकि (लिपि) का आविष्कार के लिए *सांस्कृतिक सम्मान 2011–12* से सम्मानित किया गया।

राजधानी

हिन्दुस्तान • रांची • शनिवार • 29 अक्तूबर 2011

विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी हस्तियां, जिन्हें सरकार ने सम्मानित किया। • हिन्दुस्तान

डॉ केसरी को भी मिला लाइफ टाइम अवार्ड

रांची। राज्य सरकार ने शुक्रवार को कला केंद्र होटवार में कला संगीत और साहित्य तथा अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वालों को सम्मानित किया। इसके तहत कला , संस्कृति, भाषा, संगीत और अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित होने वालों में डॉ. रामदयाल मुंडा के साथ-साथ डॉ. बीपी केसरी को राज्य सरकार की ओर से लाइफ टाइम एचीवमेंट एवार्ड से सम्मानित किया गया।

इससे पहले डा केसरी को भी 50 हजार का चेक और सम्मान पत्र के साथ दोशाला दिया गया। इनके अलावा 20 अन्य विशिष्ट लोगों को राजकीय सम्मान दिया गया । राजकीय सम्मान पाने वाले लोगों को 10-10 हजार रुपये, सम्मान पत्र के साथ दोशाला भेंट किया गया। उप मुख्यमंत्री महतो, विधायक कमल किशेर भगत , डा. देवशरण भगत, डा. बहादुर सिंह ने सबको सम्मानित किया। लोगों ने कहा कि डॉ मुंडा इसके हकदार थे।

नाम	क्षेत्र
डा . भुवनेश्वर अनुज	साहित्य, इतिहास, शिक्षा एवं पत्रकारिता
डा . श्रवण गोस्वामी	साहित्य, मंचन, लेखन और ग्रंथ
रोजलीन लकड़ा	नाट्य, रेडियो में सुगिया बहन के चरित्र से प्रसिद्धि
बीजु टोप्पो	झारखंडी एवं कुड़ुख फिल्म निर्माण
मेघनाथ	झारखंड पर विशेष फिल्म निर्माण (अनुपस्थिति के कारण पत्नी कांता तिर्की ने सम्मान ग्रहण किया)
सविता मिश्रा	ओडिसी नृत्य
सइनी उपेंद्र पाल नाहन	नागपुरी साहित्य, विविध विधाओं में लेखन एवं कवि
डा . गिरधारी राम गौंझु	साहित्य, इतिहास, संस्कृति, एवं सामाजिक पत्रकारिता, शिक्षा(अनुपस्थिति के कारण भाई शंकरलाल ने सम्मान लिया)
डा . रामकुमार तिवारी	खोरठा, नृत्य , संगीत, हिन्दी साहित्य, पत्रकारिता, भूगोल एवं पर्यावरण
डा . कमल कुमार बोस	हिन्दी साहित्य एवं रंगकर्म
कुमकुम गौड़	टीवी एवं रेडियो में अभिनय
चंद्र मोहन खन्ना	अभिनय एवं नाट्यकला
डा . केसी टुडू	भाषाविद्, संथाली साहित्य और शिक्षा
डा . हरि उंराव	भाषाविद् , उंराव साहित्य, शिक्षा
डा . भुवनेश्वर सवैया	हो भाषा साहित्य, संस्कृति एवं पत्रकारिता (अनुपस्थित रहे)
प्रो . गणेश मुर्मू	लेखन विशेषकर संथाली भाषा एवं साहित्य एवं शब्द कोष
दीनबंधु ठाकुर	लोक नर्तक, गायक एवं नृत्य प्रशिक्षक
डा नारायण उंराव सौंदा	चिकित्सा, कुड़ुख लिपि अनुसंधान
चूना राम हेंब्रम	प्रसिद्ध चित्रकार
पांडेया मुंडा	सिंगुआ छउ गुरु देश विदेश में प्रस्तुति(अनुपस्थित)

पांडेय अैर सवैया का सम्मान पत्र ईस्टजोन कल्चरल सोसाइटी के कमल कुमार बोस ने लिया।

9. डॉ0 नारायण उराँव द्वारा कुँड़ुख़ समाज के चिन्तकों एवं बुद्धिजीवियों से सलाह–मषविरा कर अपने पैतृक गाँव में 29 अक्टूबर 2011 को धुमकुड़िया का आधुनिक स्वरूप में स्थापित किये जाने की रूपरेखा तैयार। डॉ0 विजय उराँव (वर्तमान में गुजरात राज्य स्वास्थ्य सेवा में कार्यरत) ने इस कार्य में महती योगदान दिया।

Dr. Narayan Oraon along with promoter of Tolongsiki.com, Dr. Vijay Oraon, Sisai, Gumla.

o"kZ & 2012

1. 14 जनवरी, 2012 को प्रथम /kedqfM+;k fnol सैन्दा, सिसई, गुमला में MkW0 ukjk;.k mjkWo ^lqUnk* के नेतृत्व में तथा मुख्य अतिथि, सेवानिवृत मुख्य अभियन्ता Jh vftr eukgj [ky[kks

की उपस्थिति में मनाया गया तथा /kedfM;k की नई परिकल्पना के साथ धुमकुड़िया में पढ़ाई–लिखाई का कार्य आरंभ किया गया।

2- Rkkyk³ flfd fnol] 20 फरवरी 2012 को dkfrd mjkao cky fodkl fo|ky;] flflbZ] गुमला एवं *अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा)* के संयोजन में झारखण्ड राज्य समन्वय समिति के सदस्य डॉ0 देवषरण भगत, डॉ0 निर्मल मिंज, डॉ0 करमा उराँव, प्रो0 बेनार्ड मिंज, फा0 अगस्तन केरकेट्टा, पा0 सिरिल हंस, डॉ0 नारायण भगत, प्रो0 सोमनाथ उराँव, डॉ0 नारायण उराँव, श्री मंगरा मुण्डा, श्री लोयो उराँव आदि के उपस्थिति में मनाया गया। समारोह में कुँड़ुख़ भाषा एवं लिपि के विकास का संकल्प लिया गया।

3. Lkkjk Hkkjr mjkao dY;k.k lfefr] बीरभूम, प0 बंगाल द्वारा आयोजित, Jh fuekbZ pUnz ljnkj की अध्यक्षता में दिनांक 07.04.2012 ई0 को *वार्षिक सम्मेलन – 2012* सम्पन्न। इस सम्मेलन में *बीरभूम, प0 बंगाल* के प्रतिभागियों ने *तोलोंग सिकि* को कुँड़ुख़ भाषा की लिपि स्वीकार करते हुए, संविधान की आठवीं अनुसूची में षामिल किये जाने की वकालत की गई।

4. vf[ky Hkkjrh; ljuk /keZ leUo; lfefr के नेतृत्व में दिनांक 20 मई 2012 ई0 को माननीय गृह मंत्री, केन्द्र सरकार, नई दिल्ली से मुलाकात कर *कुँड़ुख़ भाषा* को संविधान की आठवीं अनुसूची में षामिल किये जाने की मांग की गई।

5. jkth iM+gk] Hkkjr ने Jh ckxh ydM+k] jkth cSy के नेतृत्व में तथा डॉ0 करमा उराँव एवं डॉ0 हरि उराँव की उपस्थिति में 27 मई 2012 ई0 को राजी पड़हा के स्वर्ण जयन्ती समारोह, मोरहाबादी, राँची में ओड़िसा, छतीसगढ़, झारखण्ड, असम, पश्चिम बंगाल से आये पड़हा प्रेमियों ने rksykax flfd को dqM+[k Hkk"kk dh fyfi की मान्यता दी।

दिनांक-27.05.12, राजी पड़हा स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर

यह खुशी की बात है कि कुँड़ुख भाषा की लिपि विकसित हो चुकी है। कुँड़ुख समाज ने अपनी भाषा की लिपि के रूप में तोलोंग सिकि 'लिपि' को अंगीकृत कर लिया है। झारखण्ड सरकार द्वारा वर्ष-2003 में इसे कुँड़ुख भाषा की लिपि की मान्यता देते हुए संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किये जाने हेतु अनुमोदन किया जा चुका है। झारखण्ड अधिविद्य परिषद राँची द्वारा वर्ष 2009 से इस लिपि से मैट्रिक की परीक्षा (कुँड़ुख भाषा विषय) इसके माध्यम से लिखने की अनुमति मिल चुकी है तथा परीक्षाएँ लिखी जा रही हैं।

कुँड़ुख भाषा की लिपि "तोलोंग सिकि" को प्रतिस्थापित करने का कार्य पेशे से चिकित्सक डॉ० नारायण उराँव "सैन्दा" द्वारा किया गया है। इन्होंने अपनी लगन एवं सूझबूझ से आदिवासी समाज के बुद्धिजीवियों का मन्तव्य एवं दिशा निर्देश प्राप्त कर भाषा विज्ञान की कसौटी पर मानक बनाया है। आज यह लिपि नवीनतम तकनीक कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट पर उपलब्ध है।

लिपि के विकास के क्रम में डॉ० उराँव द्वारा राजी पड़हा वार्षिक अधिवेशन-1995 बमनडीहा, लोहरदगा में तोलोंग सिकि (लिपि) का प्रस्तुतिकरण किया गया। राजी पड़हा दिवान श्री भिखराम भगत के नेतृत्व में पड़हा प्रेमियों ने इसे कुँड़ुख भाषा की लिपि के रूप में स्वीकार किया, साथ ही यह सुझाव आया कि लिपि के साथ इसका व्याकरण भी तैयार हो तभी यह कार्य पूर्ण होगा।

डॉ० उराँव ने इस मुश्किल कार्य की चुनौती स्वीकार करते हुए आविष्कार लिपि के साथ व्याकरण एवं भाषा विज्ञान दोनों रूपों में दो पुस्तकें तैयार कर ली और राजी पड़हा दिवान स्व० भिखराम भगत की 74 वीं जयंती, 10 जनवरी 2011 के अवसर पर बलीजोड़ी, राउरकेला, ओड़िसा में गुरुमाता श्रीमती … भगत के हाथों सौंप कर स्व० भिखराम एवं राजी पड़हा की परिकल्पना को साकार किया। आज यह "कुँड़ुख … अरा …" एवं "कुँड़ुख कत्थअइन अरा पिंज्जसोर" नामक दो पुस्तकें आपके समक्ष नेत्र ग्राह्य हैं।

ज्ञात हो कि डॉ० उराँव की पूज्य माता श्रीमती फूलमनी उराँव, राजी पड़हा की उप-बेल रही हैं जिनके आशीर्वाद से उनका बेटा कुँड़ुख समाज के लिए एक अमूल्य धरोहर भेंट किया जो हम सभी पड़हा प्रेमियों के लिए गर्व की बात है।

राजी पड़हा की ओर से राजी पड़हा स्वर्ण जयंती के अवसर पर हम तोलोंग सिकि (लिपि) को स्वीकृत एवं अंगीकृत करते हैं तथा इसके सर्जक डॉ० नारायण उराँव सैन्दा एवं उनके परिवार के सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देते हैं।

राजी दिवान
राजी पड़हा भारत

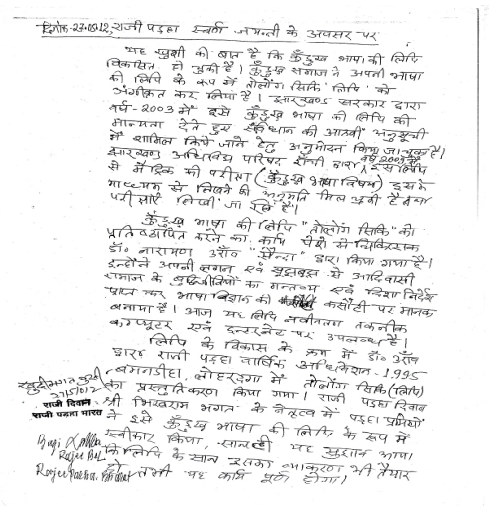

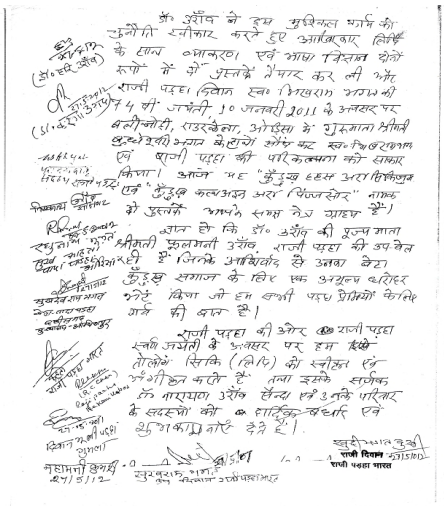

6. सीताराम डेरा, जमषेदपुर में fVLdk dEiuh द्वारा प्रायोजित एवं mjko lekt ftyk lfefr की देख–रेख में 2 जून 2012 से कुँडुख़ भाषा एवं *तोलोंग सिकि* की अनौपचारिक षिक्षा आरंभ हुई।

7. डॉ0 नारायण उराँव द्वारा लिखित dqM+[k ggl vjk flfdtqek एवं dqM+[k dRFkvbu vjk fi.tlkj पुस्तक को कुँडुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया द्वारा अपने साहित्य समीक्षा बैठक में लोकार्पण किया गया।

8. egkefge jkT;iky] >kj[k.M के आमंत्रण पर दिनांक 20 जून 2012 को सम्मेलन में भाग लेते हुए पांचवी अनुसूची अन्तर्गत झारखण्ड राज्य में, निवासरत जनजातीय समाज की ‘‘परम्परागत सांस्कृतिक धरोहर (कला, संस्कृति, भाषा तथा बौद्धिक सम्पदा) एवं उनकी सुरक्षा’’ विषय पर जनजातीय सम्मेलन की स्मारिका में *तोलोंग सिकि, क्या और क्यों ?* विषय पर डॉ0 नारायण उराँव का विस्तृत लेख छपा।

9. tqu 2012 dk] वर्ष 2008 में ग्राम – ख़ाख़े, जिला – लोहरदगा के कुँडुख़ प्रेमी भाइयों द्वारा उठाये गये तीन प्रष्न – (क) अखड़ा, एन्देर गे सुना मंज्जा ? (ख) धुमकुड़िया, एन्देर गे मुंज्जरा ? (ग) पड़हा, एन्देर गे मला उक्की ? के उत्तर में डॉ0 नारायण उराँव द्वारा लोहरदगा जिला के अरकोसा गांव में ग्रामवासियों के निवेदन पर धुमकुड़िया विषय पर एक दिवसीय धुमकुड़िया सम्मेलन का आयोजन किया गया, जहाँ उक्त प्रश्नों का उत्तर दिया गया। *अद्‌दी कुँडुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्‌दी अखड़ा) के अध्यक्ष श्री ए0एम0 खलखो एवं सचिव श्री जिता उराँव, इस अवसर पर धुमकुड़िया विषयक परिचर्चा में शामिल हुए।*

10. 15 नवम्बर 2012 को *अद्‌दी कुँडुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्‌दी अखड़ा) के सहयोग से* lkgjkbZ VgMh mYyk ¼lkgjkbZ ckWlh½ श्री गजेन्दर *उराँव* के नेतृत्व में ग्राम – सैन्दा, थाना – सिसई, जिला – गुमलk में मनाया जाना, जहाँ /kedqfM+;k के बच्चों को भविष्य ही कठिनाईयों से अवगत कराया गया।

11. dqM+[k fyVjjh lkslk;Vh vkQ bafM;k का 7वाँ राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 22–24 अक्टूबर 2012 को dyqxk] vkfMlk में सम्पन्न तथा *तोलोंग सिकि* विषय पर आमंत्रित प्रतिभागियों द्वारा आपस में परिचर्चा। इस अधिवेषन के दौरान सम्मेलन हॉल के बाहर श्री बासुदेव राम खलखो द्वारा प्रस्तुत dqM+[k cUuk नामक लिपि को प्रदर्षित किया गया।

12. दिनांक 15–16 दिसम्बर 2012 को ÁFke vUrjkZ"Vªh; dqM+[k Hkk"kk lEesyu] आर्यभट्ट हॉल, राँची विश्वविद्यालय, राँची के सभागार में सम्पन्न। इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में egkefge jkT;iky] >kj[k.M] MkW0 lS;n vgen उपस्थित हुए तथा अमेरिका, स्वीडेन एवं नेपाल देष के कुँडुख़ प्रतिनिधि इसमें सम्मिलित हुए। चित्र में, सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए दायें से राँची विश्वविद्यालय, राँची के कुलपति डॉ0 एल0 एन0 भगत, विनोबा भावे विश्वविद्यालय,

हजारीबाग के कुलपति डॉ0 आर0 एन0 भगत, महामहीम राज्यपाल, झारखण्ड डॉ0 मोहम्मद सैयद एवं राँची महानगर की महापौर श्रीमती रमा खलखो।

रांची विवि के आर्यभट्ट सभागार में प्रथम अंतरराष्ट्रीय कुड़ुख सम्मेलन शुरू, राज्यपाल ने कहा

नहीं बोलेंगे, तो लुप्त हो जायेंगी भाषाएं

विभिन्न देशों से आये कुड़ुख भाषियों ने कहा

कुड़ुख के संरक्षण व संवर्द्धन में चर्च की भूमिका

(''बच्चा जब जन्म लेता है तब उसकी कोई जुबान (भाषा) नहीं होती है। धीरे–धीरे वह अपनी माँ की जुबान सीखता है। उसके लिए वह अपना सबसे ताकतवर अंग ओठ का इस्तेमाल करता है और सर्वप्रथम ओठ के सटने से निकलने वाली ध्वनि माँ, माई, माय, मम्मी, मॉम, ममा, माता, मदर, मातेर आदि का उच्चारण करता है। बच्चा अपनी माँ से जिस जुबान को सीखता है, वही उसके लिए माँ की भाषा अर्थात mother tongue होती है।''महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड, का दिनांक 15.12.2012 को *प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय कुँड़ुख़ भाषा सम्मेलन* के मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित संभाषण का अंश।)

o"kZ & 2013

1. 14 जनवरी, 2013 को द्वितीय /kedfM;k fnol ग्राम–सैन्दा, थाना–सिसई, जिला–गुमला में *श्री गजेन्दर उराँव 'कोटवार'* के नेतृत्व में तथा डॉ0 नारायण उराँव एवं मुख्य अतिथि Jh çdk'k iUuk ^idt* सेवानिवृत बैंक मैनेजर की उपस्थिति में मनाया गया तथा /kedfM;k की नई परिकल्पना के साथ धुमकुड़िया में *तोलोंग सिकि* की पढ़ाई–लिखाई आरंभ हुई।

2. Rkkyk³ flfd fnol] 20 फरवरी 2013 को झखरा कुम्बा, लोहरदगा में श्री विनोद भगत के नेतृत्व में तथा पूर्व विधायक श्री सुकदेव भगत, विधायक श्री बन्धु तिर्की, डॉ0 नारायण उराँव, डॉ0 फा0 जे0 बखला (डॉ0 एतवा उराँव), फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा तथा *अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा)* के गनमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में मनाया गया।

3. दिनांक 23 एवं 24 फरवरी 2013 को जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विष्वविद्यालय राँची के सभागार में 'कुँड़ुख़ भाषा पर तमिल भाषा का प्रभाव' विषयक दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार सम्पन्न हुआ।

4. dqM[k fyVjjh lkslk;Vh vkQ bfM;k का 8वाँ राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 24–26 अक्टूबर 2013 को भोपाल, मध्यप्रदेश में सम्पन्न हुआ। यहाँ डॉ0 नारायण उराँव की अनुपस्थिति में भी *तोलोंग सिकि* के बारे में उपस्थित प्रतिभागियों द्वारा विशेष परिचर्चा की गई।

5. 05 नवम्बर 2013 को *अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा)* के सहयोग से lkgjkb VgMh mYyk ¼lkgjb ckMh½ श्री गजेन्दर *उराँव* के नेतृत्व में ग्राम – सैन्दा, थाना – सिसई, जिला – गुमलk में मनाया जाना, जहाँ /kedfM;k के बच्चों को भाषा एवं संस्कृति के बारे में तथा भविष्य की समस्याओं से अवगत कराया गया।

6. दिनांक 24.11.2015 राःजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा, केन्द्रीय समिति, भारत की दो दिवसीय वार्षिक बैठक दिनांक 23 एवं 24 नवम्बर 2013 का मुड़मा पड़हा भवन में सम्पन्न हुई। बैठक में गहन विचार–विमर्श एवं छानबीन के पश्चात् सभा की ओर से तोलोंग सिकि लिपि को अंगीकार कर, घोषणा पत्र जारी किया गया। बैठक में केन्द्रीय समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष, धर्मगुरू बंधन तिग्गा, राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष, धर्मगुरू डी0 डी0 तिर्की, राष्ट्रीय महासचिव, धर्मअगुवा प्रो0 प्रवीण उराँव, राष्ट्रीय सचिव श्री सोमे उराँव, श्री गजेन्द्र कुजूर, श्री भूलन उराँव, श्री संजय उराँव, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री राजेश खलखो (रंथु), राष्ट्रीय उप कोषाध्यक्ष माननीय पार्वती उराँव, राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री विरेन्द्र भगत एवं श्री मनीलाल उराँव उपस्थित थे।

जय सरना! जय धरम!! जय धरती माँ!!

राजी पाड़हा सरना प्रार्थना सभा

राष्ट्रीय समिति, भारत
राष्ट्रीय कार्यालय :-
पाड़हा भवन, जतरा स्थल, मुड़मा (माण्डर), राँची (झारखण्ड) – 835205

राष्ट्रीय अध्यक्ष
धर्मगुरू बंधन तिग्गा
मो.नं. 09939732403

राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष
धर्मगुरू डी.डी. तिर्की
मो.नं. 09238568067

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
झारखण्ड–धर्म आगुवा नीरज मुण्डा
09431535083
उड़ीसा–धर्म आगुवा बालकृष्णा एक्का
मो.न. 09861091837
बंगाल– धर्मआगुवा जीतू उराँव
मो.न. 09143613436
छत्तीसगढ़ –धर्मआगुवा मिटकु भगत
मो.न.07897136498
बिहार–धर्म आगुवा कृष्णा देव उराँव
मो.न. 09472409667

राष्ट्रीय महासचिव
धर्मआगुवा प्रो० प्रवीण उराँव
मो.न. 09431175876

राष्ट्रीय सचिव
झारखण्ड – सोमे उराँव
मो.न. 09570216853
उड़ीसा–गजेन्द्र कुजूर
मो.न. 09938319801
छत्तीसगढ़–भूलन उराँव
मो. न०.....
बंगाल –सोमे उराँव
मो.न. 09831345022
बिहार –संजय उराँव
मो.न. 08987169528

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
राजेश खलखो (एंथु)
मो.न. 09431520883

राष्ट्रीय उप कोषाध्यक्ष
पार्वती उराँव
मो.न. 09955834075

राष्ट्रीय प्रवक्ता
धर्म आगुवा – विरेन्द्र भगत
मो.न. 09934582088
धर्म अगुवा–मनी लाल केरकेट्टा
मो.न. 09437187780

राष्ट्रीय कार्यालय सचिव
अनिल उराँव
मो.न. 09709201927

पत्रांक .....

दिनांक 24/11/13

घोषणा-पत्र

राजी पाड़हा सरना प्रार्थना सभा की केन्द्रीय समिति, भारत की वार्षिक बैठक वर्ष 2013 में दिनांक 23 और 24 नवम्बर 2013 को मुड़मा पाड़हा भवन में दो दिवसीय आयोजित हुई।

बैठक में कुँड़ुख भाषा एवं संस्कृति की संरक्षण एवं संवर्द्धन के तरीकों पर विशेष परिचर्चा हुई। परिचर्चा में यह तथ्य प्रकाश में आया कि वर्त्तमान भूमण्डलीय करण के दौर में किसी संस्कृति को बचाने के लिए उसकी भाषा को जीवित रखना अनिवार्य है तथा भाषा को संवर्द्धित करने के लिए उसे शिक्षा व्यवस्था में शामिल किया जाना आवश्यक है, तभी भाषा और संस्कृति को बचाया जा सकता है।

उक्त के आलोक में "कुँड़ुख भाषा" की लिपि के रूप में "तोलोंग सिकि लिपि" को कुँड़ुख भाषा की लिपि के रूप में अंगीकार किया गया तथा इसी लिपि से पढ़न-पाठन किये जाने

जय सरना! जय धरम!! जय धरती माँ!!

राजी पाड़हा सरना प्रार्थना सभा

राष्ट्रीय समिति, भारत
राष्ट्रीय कार्यालय :-
पाड़हा भवन, जतरा स्थल, मुड़मा (माण्डर), राँची (झारखण्ड) – 835205

राष्ट्रीय अध्यक्ष
धर्मगुरू बंधन तिग्गा
मो.नं. 09939732403

राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष
धर्मगुरू डी.डी. तिर्की
मो.नं. 09238568067

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
झारखण्ड–धर्म आगुवा नीरज मुण्डा
09431535083
उड़ीसा–धर्म आगुवा बालकृष्णा एक्का
मो.न. 09861091837
बंगाल– धर्मआगुवा जीतू उराँव
मो.न. 09143613436
छत्तीसगढ़ –धर्मआगुवा मिटकु भगत
मो.न.07897136498
बिहार–धर्म आगुवा कृष्णा देव उराँव
मो.न. 09472409667

राष्ट्रीय महासचिव
धर्मआगुवा प्रो० प्रवीण उराँव
मो.न. 09431175876

राष्ट्रीय सचिव
झारखण्ड – सोमे उराँव
मो.न. 09570216853
उड़ीसा–गजेन्द्र कुजूर
मो.न. 09938319801
छत्तीसगढ़–भूलन उराँव
मो. न०.....
बंगाल –सोमे उराँव
मो.न. 09831345022
बिहार –संजय उराँव
मो.न. 08987169528

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
राजेश खलखो (एंथु)
मो.न. 09431520883

राष्ट्रीय उप कोषाध्यक्ष
पार्वती उराँव
मो.न. 09955834075

राष्ट्रीय प्रवक्ता
धर्म आगुवा – विरेन्द्र भगत
मो.न. 09934582088
धर्म अगुवा–मनी लाल केरकेट्टा
मो.न. 09437187780

राष्ट्रीय कार्यालय सचिव
अनिल उराँव
मो.न. 09709201927

पत्रांक .....

दिनांक 24/11/13

की घोषणा की गई।

राजी पाड़हा सरना प्रार्थना सभा की राष्ट्रीय समिति की ओर से तोलोंग सिकि लिपि के संस्थापक डा० नारायण उराँव "सैन्दा" को बधाई दी गई।

आदर सहित

प्रवीण उराँव
24/11/13
(प्रवीण कुमार उराँव)
राष्ट्रीय महासचिव
सह- धर्मआगुवा
राजी पाड़हा सरना प्रार्थना सभा,
भारत।

o"k & 2014

1. 04 एवं 05 जनवरी, 2014 को vkly vle dqM[k ¼mjkao½ lkfgR; lHkk के तत्वधान में दो दिवसीय सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में मुख्य अतिथि श्री सिन्थयुस कुजूर, सदस्य, राज्यसभा एवं श्री जोसेफ टोप्पो, सदस्य, लोकसभा तथा झारखण्ड से डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं फा0 अलबिनुस मिंज तथा छत्तिसगढ़ से डॉ0 (श्रीमती) उषा रानी मिंज ने अपने विचार रखे। सम्मेलन में गहन विचार–विमर्ष के बाद तीन बातें सामने आयीं, जिसे सामाजिक मांग के तौर पर असम राज्य सरकार के समक्ष ज्ञापन के रूप में सांसद श्री सिन्थयुस कुजुर को सौंपा गया – 1. असम में रह रहे आदिवासियों को अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया जाय। 2. कुँडुख़ भाषा को संविधान की 8 वीं अनुसूची में शामिल किया जाय। 3. कुँडुख़ भाषा की पढ़ाई तोलोंग सिकि (लिपि) के माध्यम से 1ली से 5वीं तक शुरू किया जाय।

2. 14 जनवरी, 2014 को /kqedqfM+;k mYyk ग्राम – छोटकासैन्दा, थाना – सिसई, जिला – गुमलk ¼झारखण्ड) में *श्री गजेन्द्र उराँव 'कोटवार'* के नेतृत्व में तथा डॉ0 नारायण उराँव एवं श्री मंगरा उराँव, सेवानिवृत कार्यपालक सहायक, एच. ई. सी. की उपस्थिति में मनाया गया। इस अवसर पर कई /kqedqfM+;k के बच्चे उपस्थित थे।

3. Rkksyksa³ flfd fnol] 20 फरवरी 2014 को ललित उराँव नगर भवन, गुमला में पूर्व विधायक श्री बेर्नाड मिंज, श्री विनोद भगत एवं श्रीमती बॉबी भगत के संयोजन में मुख्य अतिथि पूर्व कुलपति वि0 भा0 वि0 हजारीबाग, डॉ0 रविन्द्र नाथ भगत एवं विशिष्ट अतिथि विशप डॉ0 निर्मल मिंज के संरक्षण में मनाया गया। इस अवसर पर बायें से दायें डॉ0 शान्ति खलखो, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', श्री बेर्नाड मिंज, श्रीमती बॉबी भगत, विशप डॉ0 निर्मल मिंज, श्री ए0एम0खलखो, फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा के अतिरिक्त फा0 अलबिनुस मिंज, डॉ0 नारायण भगत, श्री जिता उराँव, श्री बहुरा उराँव, श्री भइया रामन कुजूर, एडवोकेट अघनु उराँव, श्री गजेन्दर उराँव 'कोटवार' तथा गुमला जिला के कई गनमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में मनाया गया। समारोह में एराउज, गुमला, कुँडुख़ कत्थ खोंड़हा, लूरएड़पा भागीटोली, डुमरी अद्दी कुँडुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (शाखा कार्यालय) छोटकासैन्दा, सिसई, बालिका छात्रावास, गुमला, सिनगी दई महिला कॉलेज छात्रावास, गुमला, कार्तिक उराँव कॉलेज छात्रावास, गुमला, सरना कॉलेज छात्रावास, गुमला, उराँव छात्रावास, गुमला आदि के छात्र–छात्राों ने कार्यक्रम को सफल बनाया।

4. 20, 21 एवं 20 मई 2014 को, *21 पड़हा ग्रामसभा बिसुसेन्दरा* एवं *अद्दी कुँडुख चाःला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा)* के संयोजन में मौजा – छोटकासैन्दा, थाना – सिसई, जिला – गुमला में परम्परागत कुँडुख़ समाज के 21 ग्राम सभा के आदिवासियों ने, दो दिवसीय सम्मेलन कर कुँडुख़ भाषा की लिपि के रूप में rksyksa³ flfd को सामाजिक मान्यता प्रदान किया तथा इस लिपि से परम्परागत धुमकुड़िया के माध्यम से पढ़ाई–लिखाई आरंभ करने की सामाजिक

घोषणा जारी की। सम्मेलन में पूर्व विधायक श्री समीर उराँव, डॉ0 देवशरण भगत, श्री शिवशंकर उराँव एवं रा:जी पड़हा के कई गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

5. दिनांक 05 सितम्बर 2014, को ग्राम सभा छोटकासैन्दा, थाना – सिसई, जिला – गुमला द्वारा /kedfM;k yjeMk स्थान में *अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा) की देखरेख में* iMgk /kedfM;k dM[kdRFk yj,Mik ¼fo|ky;½ की स्थापना की गई। इस विद्यालय में हिन्दी, अंगरेजी एवं कुँड़ुख़ भाषा विषय (क्रमशः देवनागरी, रोमन एवं तोलोंग सिकि लिपि) को आधार बनाया गया है। साथ ही निर्णय लिया गया कि Ldy LFkiuk fnol एवं x:ckck trjk Vkuk Hkxr t;rh] 05 सितम्बर को मनाया जाएगा।

6. 20 सितम्बर 2013 को lr LrkfuLykl mPp fo|ky;] irjkVkyh] ykgjnxk में विद्यालय के प्राधानाचार्य फादर एग्नेस लकड़ा एवं समाजसेवी श्री विनोद भगत की अगुवाई में कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि (लिपि) की आवश्यकता एवं उपयोगिता विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित हुई। कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' ने उपरोक्त विषय पर विस्तृत चर्चा की तथा अग्रेतर विकास हेतु कार्य योजना तैयार करने को प्रोत्साहित किया।

7. dM[k fyVjjh lklk;Vh vkQ bfM;k का 9वाँ राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 2–4 अक्टूबर 2014 को v.Mkeu ¼v.Mkeu&fudkckj½ में सम्पन्न हुआ। सोसायटी की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 हरी उराँव, सचिव श्री अशोक बखला, कोषाध्यक्ष डॉ0 सेशिल खाखा एवं अलग–अलग स्टेट चैप्टर चीफ मौजूद थे। फा0 अगस्तिन केरकेट्टा ने लगभग 1 महीना पूर्व से ही अलग–अलग द्वीप के लोगों से मिलकर सम्मेलन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। उपस्थित प्रतिभागियों के बीच *तोलोंग सिकि* विषयक परिचर्चा फा0 अगस्तिन केरकेट्टा के नेतृत्व में हुई।

8. 25 अक्टुबर 2014 को *अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा)* के सहयोग से lkgjkbl VgMh mYyk ¼lkgjbl ck%lh½ श्री गजेन्दर उराँव *'पड़हा कोटवार'* के नेतृत्व में ग्राम – सैन्दा, थाना – सिसई, जिला – गुमलk dk cykVkxjh में मनाया गया। इस अवसर पर *मुख्य अतिथि, राजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा के* /kekx: Jh c/ku frXxk *एवं* डॉ0 नारायण उराँव की उपस्थिति में शुभारंभ हुआ। इसमें धुमकुड़िया के बच्चे एवं स्थानीय पड़हा पंच प्रतिभागी थे।

9. दिनांक 11 दिसम्बर 2014 से 13 दिसम्बर 2014 तक, tknoiqj ;fuofIVh] dkydrk में dM[k ykd lkfgR; dk cxyk&vxjth vuqokn विषयक कार्यशाला सम्पन्न हुआ। इस कार्यशाला में डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', फा0 अगस्तिन केरकेट्टा, श्री बिमल टोप्पो, श्री जवाल बघवार एवं श्रीमती सुको भगत द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया। कार्यशाला में भाषाविद् डॉ0 मॉहिदास भट्टाचार्य (09432804387) ने कहा कि किसी भाषा के सम्पूर्ण विकास के लिए उसका सांस्कृतिक धरोहर एवं नेत्र ग्राह्य रूप (अर्थात उसकी अपनी लिपि) का होना आवश्यक है। वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में ;fuolly fIIVe को अपनाते हुए, अपनी सांस्कृतिक धरोहर को बचाये रखने के लिए अपनी मातृभाषा की शिक्षा आवश्यक है। कुँड़ुख़ भाषा की तोलोङ सिकि की ध्वनिमूलक पहचान को बरकरार रखने हेतु उन्होंने लिपि के विकास में कुछ कमियों की ओर तर्क पूर्ण विचार दिया और उसे दूर करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा – देश में राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक बिरासत दोनों आवश्यक है।

tknoiqj ;fuofIVh] dkydrk d HkK"kkfon Ák- Mk- ekfgnkI HkV'Vkpk;I d IkFk eykdkrA
ck;i I Jh eg'k ,I- fert] Mk- ekfgnkI HkVVkpk;I ,o Mk- ukjk;.k mjkao ^IUnk*A

10. भाषाविद् डॉ. मॉहिदास भट्टाचार्य के सुझाव पर 21 दिसम्बर 2014 को *अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, राँची* की सलाहकार समिति की बैठक हुई। बैठक में कई गनमान्य सदस्यों के साथ विचार–विमर्श कर सर्वसम्मति से अनुनासिक स्वर ध्वनि सूचक चिह्न के लिए '˜' चिह्न एवं स्थान निर्धारित हुआ जिसका नाम 'सरङा/एवाँ' रखा गया तथा निर्णय लिया गया कि समयानुकूल बेहतर सुझाव आने पर नामकरण में पुनर्विचार किया जा सकता है।

o"kZ & 2015

1. 14 जनवरी, 2015 को /kedfM;k dkjuk mYyk (धुमकुड़िया प्रवेश दिवस) को छोटकासैन्दा, थाना : सिसई, जिला : गुमलk ¼झारखण्ड) में *श्री गजेन्द्र उराँव 'कोटवार'* के नेतृत्व में तथा पडहा पंच सदस्यों की उपस्थिति में मनाया गया। इस अवसर पर कई /kedfM;k के बच्चे उपस्थित थे।

2. 01 फरवरी, 2015 को vf[ky Hkkjrh; rkyk³ flfd Ápkfj.kh lHkk को करमटोली चौक राँची में सभा की बैठक कर की निर्णय लिया गया कि 20 फरवरी 2015 को rkyk³ flfd fnol,

कार्तिक उराँव आदिवासी कुँडुख़ उच्च विद्यालय, मंगलो, सिसई में मनाया जाएगा। बैठक में प्रचारिणी सभा के साथ अद्दी कुँडुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा) के सदस्य भी संयुक्त रूप से कार्यक्रम में शामिल होने के लिये तैयार हुए।

3. 03 फरवरी, 2015 को *अद्दी कुँडुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा) के सहयोग से* /kedfM;k ek?k trjk (माघ पुर्णिमा) ग्राम : छोटकासैन्दा, थाना : सिसई, जिला : गुमला (झारखण्ड) में *श्री गजेन्द्र उराँव 'पड़हा कोटवार'* के अगुवाई में 52 पडहा ग्रामसभा बिसुसेन्दरा सम्मेलन समिति के सदस्यों एवं गाँव वालों के साथ मनाया गया। इस अवसर पर कई /kedfM;k के बच्चे उपस्थित थे।

4. 08 फरवरी 2015 को डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', डॉ0 (श्रीमती) ज्योति टोप्पो एवं डॉ0 एतवा उराँव (लूरडिप्पा के संस्थापक) की उपस्थिति में तोलोङ सिकि की व्यवहारिक समस्याएँ एवं समाधान विषयक परिचर्चा, डॉ0 नारायण उराँव के आवास पर हुई। समीक्षोपरांत, देवनागरी लिपि के साथ लिप्यन्तरन में : स्=[illegible] श्=[illegible] ष्=[illegible] श्र=[illegible] क्ष=[illegible] त्र=[illegible] ज्ञ=[illegible] ऋ=[illegible] ई=[illegible] ऊ=[illegible] ए=[illegible] ओ=[illegible] ऐ=[illegible] औ=[illegible] अं=[illegible] अः=[illegible] अँ=[illegible] रखा गया।

5. 15 फरवरी, 2015 को *अद्दी कुँडुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा)* के सहयोग से /kedfM;k yjeMk] ग्राम : छोटकासैन्दा, थाना : सिसई, जिला : गुमला (झारखण्ड) में *श्री गजेन्द्र उराँव 'पड़हा कोटवार'* के अगुवाई में बैठक हुई, जिसमें समिति के सदस्यों एवं गाँव वालों ने निर्णय लिया कि ग्राम स्तर पर fluxhnbZ efgyk 'kfDrdj.k lfefr नामक उपसमिति गठित की गई जो अददी अखड़ा की देखरेख में संचालित होगी। इस अवसर पर कइZ /kedfM;k समिति के सदस्य उपस्थित थे।

6. Rkkyk³ flfd mYyk ¼fnol½] 20 फरवरी 2015 को *कार्तिक उराँव आदिवासी कुँडुख़ उच्च विद्यालय, मंगलो,* सिसई, गुमला एवं *अद्दी कुँडुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा)* द्वारा आयोजित कार्यक्रम में Jh fnus'k mjkao] v/;{k] >kj[k.M fo/kku lHkk एवं पूर्व शिक्षा मंत्री, झारखण्ड सरकार श्रीमती गीताश्री उराँव, विशप डॉ0 निर्मल मिंज, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा, फा0 प्रेमचन्द तिर्की, फा0 प्रफुल्ल तिग्गा, फा0 देवनीस खेस्स, श्री फिलमोन टोप्पो, श्री जिता उराँव, श्री मंगरा उराँव, श्री गजेन्दर उराँव 'कोटवार' तथा गुमला जिला के कई गनमान्य व्यक्तियों तथा शिक्षकों की उपस्थिति में मनाया गया। समारोह में कुँडुख़ कत्थ खोंड़हा, लूरएड़पा भागीटोली, पड़हा धुमकुड़िया कुँडुख़कत्थ लूरमंडा, छोटकासैन्दा आदि के छात्रों ने भाग लिया। इस अवसर पर माननीय अध्यक्ष, श्री दिनेश उराँव द्वारा स्कूल के बच्चों के समक्ष दो वचन दिया गया – 1. इस विद्यालय के टॉपर को वे 11000/..रूपये देंगे। 2. वर्ष 2016 सत्र से इस विद्यालय के बच्चे कुँडुख़ भाषा की परीक्षा, कुँडुख़ भाषा की लिपि, तोलोंग सिकि में लिखेंगे।

7. 09 – 10 मई 2015 को, *52 पड़हा ग्रामसभा बिसुसेन्दरा सम्मेलन समिति* एवं *अद्दी कुँड़ुख चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा)* के संयोजन में मौजा – चैगरी छपरबगीचा, थाना सिसई, जिला गुमला में परम्परागत कुँड़ुख़ समाज के 52 ग्राम सभा के आदिवासियों ने, दो दिवसीय सम्मेलन कर कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप में तोलोंग सिकि को सामाजिक मान्यता प्रदान किया तथा इस लिपि से परम्परागत धुमकुड़िया के माध्यम से पढ़ाई–लिखाई आरंभ करने की सामाजिक घोषणा जारी की। सम्मेलन में झारखण्ड सरकार की पूर्व शिक्षा मंत्री, Jherh xhrkJh mjko एवं पूर्व विधायक Jh lehj mjko मौजूद थे।

न्यूज विंग NEWS WING

कवर विंग

09–10 मई 2015

दो दिवसीय 52 पड़हा बिसु सेन्दरा महाधिवेशन 2015 संपन्न

कुँड़ख परम्परा व रस्म रिवाज को सख्ती से निभाने का निर्देश

पड़हा के बुधना उरावं (बेल), गजेन्द्र उरावं (देवान) एवं बुधराम उरावं (भंडारी) द्वारा जारी विज्ञप्ति पर आधारित आलेख

52 ग्रामसभा पड़हापाट बिसुसेन्दरा महाधिवेशन 2015 का घोषणा पत्र

कैम्प कार्यालय – धुमकुड़िया मंडा, छोटका सैन्दा, थाना : सिसई, जिला : गुमला (झारखण्ड)

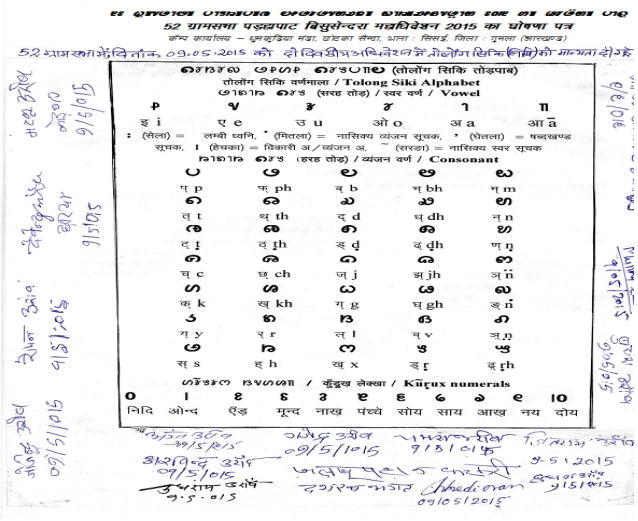

(तोलोंग सिकि तोड़पाब)

तोलोंग सिकि वर्णमाला / Tolong Siki Alphabet

(सरह तोड़) / स्वर वर्ण / Vowel

इ i, ए e, उ u, ओ o, अ a, आ ā

: (सेला) = लम्बी ध्वनि, ˙ (मितला) = नासिक्य व्यंजन सूचक, ’ (घेतला) = षब्दखण्ड सूचक, । (हेचका) = विकारी अ/व्यंजन अ, ˜ (सरडा) = नासिक्य स्वर सूचक

(हरह तोड़) / व्यंजन वर्ण / Consonant

प् p	फ् ph	ब् b	भ् bh	म् m
त् t	थ् th	द् d	ध् dh	न् n
ट् ṭ	ठ् ṭh	ड् ḍ	ढ् ḍh	ण् ṇ
च् c	छ् ch	ज् j	झ् jh	ञ् n̈
क् k	ख् kh	ग् g	घ् gh	ङ् ṅ
य् y	र् r	ल् l	व् v	ञ् ṇ
स् s	ह् h	ख़् x	ड़् ṛ	ढ़् ṛh

/ कुँड़ुख लेक्खा / Kūṛux numerals

0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
निदि	ओन्द	एँड़	मून्द	नाख	पंच्चे	सोय	साय	आख	नय	दोय

8. दिनांक 16–17 मई 2015 को f}rh; vUrjk"Vh; dqM[k Hkk"kk lEesyu] विराटनगर, नेपाल में सम्पन्न। इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि uiky d ikö mii/kkueU=h mifLFkr थे। नेपाल में भूकम्प के वावजूद, भारत एवं बंगलादेश के कुँड़ुख़ प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

9. 22, 23 एवं 24 मई 2015 को, jk\th iMgk] Hkkjr का तीन दिवसीय रा:जी पड़हा अधिवेशन, लोरोबगीचा, नवडीहा, गुमला में jkth iMgk noku Jh [kqnh Hkxr ^n[kh* की अगुवाई में सम्मन्न हुआ। झारखण्ड, छत्तीसगढ़, ओड़ीसा एवं अन्य जगहों से आये पड़हा प्रेमी तीन दिवसीय सम्मेलन में विचार–विमर्श कर कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप में rksyksÂ flfd को सामाजिक मान्यता प्रदान किया गया तथा इस लिपि से परम्परागत धुमकुड़िया एवं विद्यालयों में कुँड़ुख़ भाषा की पढ़ाई–लिखाई आरंभ करने की सामाजिक घोषणा जारी की।

तीन दिवसीय रा:जी पड़हा महाधिवेशन
लोरोबगीचा, नवडीहा, गुमला (झारखण्ड)
दिनांक – 22, 23 एवं 24 मई 2015

(तोलोंग सिकि तोड़पाब)
तोलोंग सिकि वर्णमाला / Tolong Siki Alphabet
(सरह तोड़) / स्वर वर्ण / Vowel

इ i, ए e, उ u, ओ o, अ a, आ ā

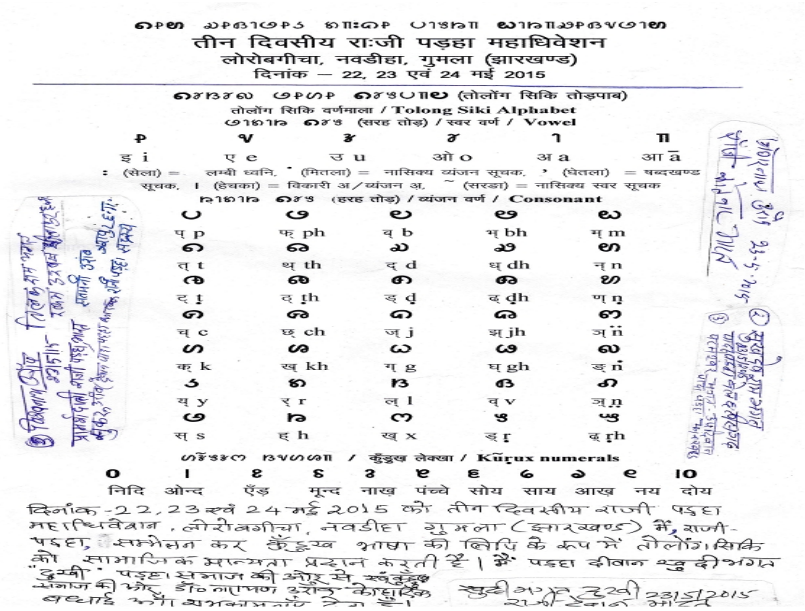

: (सेला) = लम्बी ध्वनि, ˙ (मितला) = नासिक्य व्यंजन सूचक, ' (धेतला) = षब्दखण्ड सूचक, । (हेचका) = विकारी अ / व्यंजन अ, ˜ (सरडा) = नासिक्य स्वर सूचक

(हरह तोड़) / व्यंजन वर्ण / Consonant

प् p	फ् ph	ब् b	भ् bh	म् m
त् t	थ् th	द् d	ध् dh	न् n
ट् ṭ	ठ् ṭh	ड् ḍ	ढ् ḍh	ण् ṇ
च् c	छ् ch	ज् j	झ् jh	ञ् ñ
क् k	ख् kh	ग् g	घ् gh	ङ् ṅ
य् y	र् r	ल् l	व् v	ञ् ṉ
स् s	ह् h	ख़् x	ड़् ṛ	ढ़् ṛh

कुँड़ुख़ लेक्खा / Kūṛux numerals

0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
निदि	ओन्द	ऍंड़	मून्द	नाख़	पंच्चे	सोय	साय	आख़	नय	दोय

दिनांक-22, 23 एवं 24 मई 2015 को तीन दिवसीय राजी पड़हा महाधिवेशन, लोरोबगीचा, नवडीहा गुमला (झारखण्ड) में, राजी-पड़हा, सम्मेलन कर कुँड़ुख भाषा की लिपि के रूप में तोलोंग सिकि को सामाजिक मान्यता प्रदान करती है। मैं पड़हा दीवान खुदी भगत "दुखी" पड़हा समाज की ओर से ...

10 24 एवं 31 मई 2015 को अददी कुँड़ुख़ चा:ला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा), केन्द्रीय कार्यालय, राँची के तत्वाधान में संस्था के अध्यक्ष, माननीय श्री अजीत मनोहर खलखो की अगुवाई में आदिवासी कॉलेज छात्रावास, राँची के पुस्तकालय भवन में दो दिवसीय rksyksÂ flfd ¼fyfi½ izf'k{k.k कार्यशाला सम्पन्न हुआ। इस कार्यशाला में संस्था के सचिव श्री जिता उराँव, डॉ0 नारायण भगत, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', श्री राजेन्द्र भगत, श्री मंगरा उराँव, श्री सरन उराँव, श्री भइया रमन कुजूर, श्री लोधेर उराँव, श्री किसुन उराँव, श्री नागेश्वर उराँव, शोधार्थी लक्ष्मी उराँव, शोधार्थी सीता कुमारी एवं लिपि सीखने वाले कई छात्र–छात्राएँ उपस्थित थे।

खबर मंत्र   रांची, सोमवार, 25 मई, 2015   05

तेलोंग लिपि के प्रशिक्षण में जुटे जानकार

कुड़ुख की पहचान है तोलोंग सिकि लिपि : डॉ नारायण उरांव

लोंग सिकि लिपि प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल भाषा का जानकार।

रांची। अद्दी कुड़ुख चाला धुमकुडिया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा) की ओर से आदिवासी हॉस्टल करमटोली में कुड़ुख लिपि तोलोंग सिकि का प्रशिक्षण दिया गया। कुड़ुख भाषा की लिपि तोलोंग सिकि को देश- विदेश में रहने वाले सभी क्षेत्र के उरांवों की लिपि बनाने के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कुड़ुख भाषा की लिपि बनाने के लिए जगह-जगह कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। लिपि के जनक डॉ नारायण उरांव ने बताया लिपि से ही कुड़ुख समुदाय की पहचान बनेगी। इसी के आधार पर आठवीं अनुसूची में कुड़ुख भाषा को शामिल किया जायेगा। इसके लिए काम किये जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि 2001 से ही तोलोंग सिकि लिपि से पढ़ाई जारी है। 2003 में झारखंड सरकार ने इस कुड़ुख भाषा की लिपि माना है। 2009 से इस लिपि से जैक बोर्ड में विद्यार्थी परीक्षा देते हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम में तोलोंग सिकि लिपि पर कुड़ुख पुस्तकों का लेखन करने का निर्णय भी लिया गया। संस्था के सचिव जिता उरांव ने बताया कि लिपि को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कराने के लिए लिपि जरूरी है। इसमें अजीत मनोहर खलखो, जिता उरांव, राजेंद्र भगत, डॉ नारायण उरांव, डॉ नारायण भगत, विनोद उरांव, किसुन उरांव, शोधार्थी लक्ष्मी उरांव, शोधार्थी सीता कुमारी, नागेश्वर भगत, लोधेर उरांव सहित अन्य लोग शामिल हुए।

11. भाषाविद् डॉ0 मॉहिदास भट्टाचार्य के सुझाव पर 07 जून 2015 को *तोलोंग सिकि (लिपि)* सलाहकार समिति की बैठक हुई। बैठक में कई गनमान्य सदस्यों के साथ विचार–विमर्श कर (इस क्रम में dqM+[k Hkk"kk fo'k"kK MkO ukjk;.k Hkxr के साथ परिचर्चा करते हुए, तोलोङ सिकि laLFkkid MkO ukjk;.k mjkao ^lSnk') सर्वसहमति से अनुनासिक स्वर ध्वनि सूचक चिह्न के लिए '~' चिह्न एवं स्थान निर्धारित हुआ जिसका नाम 'एवाँ' रखा गया।

12. राष्ट्रीय दैनिक समाचारपत्र Times of India अंगरेजी दैनिक समाचारपत्र द्वारा दिनांक 09 जून 2015 को Writting a New Identity शीर्षक लेख के माध्यम से तोलोङ सिकि के विकास एवं कठिनाईयों पर विस्तृत लेख प्रकाशित किया गया, जो भारत के दूरदराज सभी क्षेत्रों तक पँहुचा।

THE TIMES OF INDIA, RANCHI
TUESDAY, JUNE 9, 2015

TIMES NATION

Writing a New Identity

As acts of cultural assertion, indigenous tribes across India are devising scripts. But spreading the word isn't easy

13. भाषाविद् डॉ0 मॉहिदास भट्टाचार्य के सुझाव पर 14 जून 2015 को सामाजिक संगठन, *राजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा, केन्द्रीय समिति* के पदाधिकारियों से विचार–विमर्श किया गया। (समिति के महासचिव सह धरमअगुवा प्रो0 प्रवीण उराँव, सलाहकार, प्रो0 (श्रीमती) मन्ती उराँव के साथ विचार–विमर्श करते हुए तोलोंग सिकि के संस्थापक डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा')। लिपि में यथेष्ट

संस्करण हेतु शिक्षाविदों एवं सामाजिक संगठनों के कार्यकर्ताओं के सदस्यों के साथ आवश्यक वैचारिक एवं तकनीकि समीक्षा के उपरांत अनुनासिक स्वर ध्वनि सूचक चिह्न के लिए ' ~ ' चिह्न एवं स्थान निर्धारित हुआ जिसका नाम ^,ok* नाम को स्वीकृति प्रदान की गई।

14. d¡M¡[k Hkk"kk fodkl leUo; lfefr के कार्यशाला समन्वयकों यथा डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', फा0 अगस्तिन केरकेट्टा एवं प्रो0 महेश भगत की ओर से d¡M¡[k Hkk"kk O;kdj.kd 'kCnkoyh ekudhdj.k के तहत दिनांक 06.10.2015 को एक संयुक्त रिपोर्ट, समन्वय समिति के संयोजक, डॉ0 हरि उराँव को जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग से प्रकाशित करने हेतु सौंपा गया। इस रिर्पोट पर खुशी जाहिर करते हुए MkW gfj mjkWo ने उपस्थित प्रतिनिधियों को आश्वस्त किया कि वे जल्द ही इसे जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची से समाज के लोगों के व्यवहार के लिए लोकार्पित करवाएंगे।

15 11 अक्टूबर 2015, दिन रविवार को अददी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा), केन्द्रीय कार्यालय, राँची एवं अखिल भारतीय तोलोङ सिकि प्रचारिणी सभा की संयुक्त बैठक, अद्दी अखड़ा कार्यालय में हुई। बैठक में तोलोंग सिकि (लिपि) प्रचार–प्रसार हेतु विभिन्न स्थानों पर प्रशिक्षण कार्यशाला सम्पन्न किये जाने हेतु विस्तृत योजना तैयार की गई। इस बैठक में में अद्दी अखड़ा के अध्यक्ष श्री ए0एम0 खलखो, सचिव श्री जिता उराँव, प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा एवं महासचिव डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', श्री राजेन्द्र भगत, श्री मंगरा उराँव, श्री सरन उराँव, श्री भइया रमन कुजूर, श्री लोधेर उराँव एवं कई छात्र–छात्राएँ उपस्थित थे।

16. d¡M¡[k fyVjjh lkslk;Vh vkQ bfM;k का दसवाँ राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 21–22 अक्टूबर 2015 को ukxi¡j] egkjk"Vª में सम्पन्न हुआ। सोसायटी की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 हरी उराँव, सचिव श्री अशोक बखला, कोषाध्यक्ष डॉ0 सेशिल खाखा एवं अलग–अलग स्टेट चैप्टर चीफ मौजूद थे। इस अवसर पर *अखिल भारतीय तोलोङ सिकि प्रचारिणी सभा* की ओर से *सभा अध्यक्ष* फा0 अगस्तिन केरकेट्टा एवं महासचिव डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' द्वारा सम्मेलन में उपस्थित प्रतिभागियों के बीच *तोलोङ सिकि* विषयक विशेष रूप से परिचर्चा की गई।

17. दिनांक 13 नवम्बर 2015 को lkgjkbZ VgMh mYyk ¼lkgjkbZ ckS lh½ श्री गजेन्दर उराँव के नेतृत्व में ग्राम : छोटकासैन्दा, थाना : सिसई, जिला : गुमलk में मनाया गया। जतरा में विशेष रूप

से सिसई विधान सभा के विधायक सह झारखण्ड विधान सभा के अध्यक्ष, Jh fnu'k mjko उपस्थित होकर ग्रामीणों का उत्साह वर्द्धन किया। उन्होंने कहा कि अब छात्रगण कुँड़ुख़ भाषा की तोलोङ सिकि (लिपि) से सत्र 2016 की मैट्रिक परीक्षा में कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा लिख सकेंगे, इसके लिए विभागीय कारवाई चल रही है। साथ ही कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ उच्च विद्यालय, मंगलो, सिसई, गुमला की मैट्रिक टॉपर को 11000/–रूपये प्रोत्साहन राशि देकर, मंगलो के बच्चों को दिये अपने प्रथम बचन को पूरा किया।

18. दिनांक 15 नवम्बर 2015 को अददी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा), केन्द्रीय कार्यालय, राँची के तत्वाधान में संस्था के सचिव, माननीय श्री जिता उराँव एवं श्री राजेन्द्र भगत की अगुवाई में आदिवासी कॉलेज छात्रावास, राँची के पुस्तकालय भवन में कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि (लिपि) प्रशिक्षण कार्यशाला सम्पन्न हुआ। इस कार्यशाला में संस्था की ओर से बायें से दायें बैठे हुए श्री राजेन्द्र भगत, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', श्री मंगरा उराँव, सचिव श्री जिता उराँव, डॉ0 नारायण भगत तथा कुँड़ुख़ भाषा शिक्षक श्री बन्दे उराँव, श्री तेतरू उराँव, श्री रंजन उराँव, श्री राजु उराँव, श्री बासुदेव उराँव, श्री रंजन उराँव, सुश्री सुखमनी उराँव, श्री कमला उराँव, सुश्री लक्ष्मी उराँव, श्री महेन्द्र उराँव तथा जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग की छात्र–छात्राएँ।

19.. दिनांक 29.11.2015, दिन रविवार को तोलोङ सिकि का संक्षिप्त इतिहास के संकलन की प्रति को प्रचार–प्रसार हेतु, संकलनकर्ता सह सम्पादक डॉ0 ज्योति टोप्पो उराँव (डॉ0 नारायण उराँव की धर्मपत्नी) द्वारा अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा) के अध्यक्ष श्री ए0 एम0 खलखो एवं सचिव श्री जिता उराँव को सौंपा गया। इस अवसर पर बायें से दायें दंत चिकित्सक डॉ0 अर्चना नुपुर खलखो, संकलनकर्ता सह सम्पादक डॉ0 ज्योति टोप्पो उराँव, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', श्री ए0 एम0 खलखो, श्री जिता उराँव, श्रीमती लीलावती खलखो, श्रीमती लकड़ा, श्री लकड़ा एवं प्रो0 बेनीमाधव भगत उपस्थित थे।

l;dyu ,o lEiknu % MkW0 T;kfr Vklik mjko
fuokl % HkouQy ,Mik] [kcjen= yu] ckM;k jkM] fpjkUnh] jkphA

20. दिनांक 29.11.2015 को कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसाईटी, नई दिल्ली की ओर से वर्ष 2016 में लिटरेरी सोसाईटी का दशक समारोह मनाने के लिए केन्द्रीय कमिटि की बैठक गोस्सनर थियोलोजिकल संस्थान, राँची में सम्पन्न हुई। बैठक में 10 राज्यों के प्रतिनिधि उपस्थित हुए।

21. दिनांक 29.11.2015, समय 5.30 बजे अपराह्न, अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अखड़ा) संस्था की विशेष बैठक, संस्था मुख्यालय, म0न0 10, करमटोली चौक, मोरहाबादी, राँची में v/;{k Jh vftr eukgj [ky[kk की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में सर्व सहमति से निर्णय लिया गया कि दिनांक 30.11.2015, समय 11.30 बजे पूर्वाहन में होने वाले dqM+[k Hkk"kk ikfjHkkf"kd 'kCnkoyh 'kCn Hk.Mkj का लोकार्पण कार्यक्रम में सहभागिता निभाएँगे।

22. दिनांक 30.11.2015, दिन सोमवार को जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची के सभागार में dqM+[k Hkk"kk ikfjHkkf"kd 'kCnkoyh 'kCn Hk.Mkj का लोकार्पण, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची के विभागाघ्यक्ष, डॉ0 के0 सी0 टूडू एवं डॉ0 हरि उराँव की उपस्थिति में समारोह के मुख्य अतिथि विशप डॉ0 निर्मल मिंज के द्वारा किया गया। इस अवसर पर बायें से डॉ0 एच0 एन0 सिंह, डॉ0 नारायण भगत, श्री अशोक बखला (मौसम वैज्ञानिक, भारत सरकार, नई दिल्ली), डॉ0 के0 सी0 टूडू, विशप डॉ0 निर्मल मिंज, डॉ0 (श्रीमती) उषा रानी मिंज (अध्यक्ष, कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया, नई दिल्ली), फा0 अगस्तीन केरकेट्टा, डॉ0 फांसिस्का कुजूर, श्री जिता उराँव (सचिव, अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा, राँची) के साथ डॉ0 रामकिशोर भगत, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', श्री सरन उराँव, श्री बन्दे उराँव, श्री तेतरू उराँव एवं जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के बहुत सारे छात्र–छात्राएँ उपस्थित थे। इन सभी भाषा विशेषज्ञों एवं शिक्षाविदों ने ikfjHkkf"kd 'kCnkoyh के गुण–दोषों एवं आनेवाली पीढ़ी के लिए इसकी आवश्यकता आदि तथ्यों पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए जनसाधारण के व्यवहार के लिए dqM+[k Hkk"kk ikfjHkkf"kd 'kCnkoyh 'kCn Hk.Mkj को लोकार्पित किया गया तथा आह्‌वान किया गया कि इन पारिभाषिक शब्दावलियों के आधार पर विद्वतजन व्याकरण की रचना करें और पठन–पाठन में सहयोगी बनें।

o"kZ & 2016

1. दिनांक 05, 06 एवं 07 जनवरी 2016 को vkWy dqM+[k ¼mjkWo½ lkfgR; lHkk] vle के नेतृत्व में असम से 12 जिले से आये लगभग 15 हजार कुँडुख़ (उराँव) आदिवासियों ने ch0 Vh0 lh0 ¼ckMks VsjhVksfj;y dkmfUly½ क्षेत्र के गोसांई गाँव सबडिभिजन मुख्यालय में तीन दिवसीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में MkW0 ukjk;.k ^lqUnk*] MkW0 ¼Jherh½ 'kkfUr [ky[kks एवं Jh exjk mjkWo >kj[k.M से पहूँचे और rksyks³ flfd के बारे में साहित्य सभा को जानकारी दी। इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में ch0 Vh0 lh0 ¼ckMks VsjhVksfj;y dkmfUly½ के उच्च पदाधिकारी एवं jkT; lHkk lkaln Jh fcUFkk;l dqtqj उपस्थित थे।

कुँड़ुख़ (उराँव) साहित्य सभा, असम द्वारा प्रस्तुत

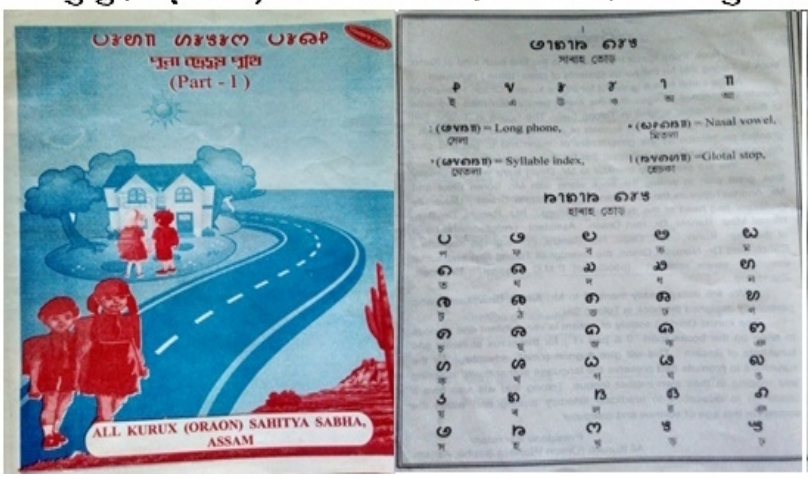

2- fnukad 12-02-2016 dks >kj[k.M vf/kfo| ifj"kn] jkaph }kjk dqM+[k Hkk"kk i= dh ijh{kk rksyks³ flfd fyfi esa fy[kus tkus dh vuqefr nh xbZA ;g fnu dqM+[k Hkk"kk ds bfrgkl esa Lof.kZe fnu gSA dqM+[k lekt] bl dk;Z ds fy;s >kj[k.M ljdkj ,oa f'k{kk foHkkx dk vkHkkj 0;Dr djrk gSA

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची
JHARKHAND ACADEMIC COUNCIL, RANCHI

अधिसूचना

संख्या – JAC/गुमला/16095/12 ...../ झारखण्ड अधिविद्य परिषद् की बैठक संख्या 73 दिनांक 23.01.2016 में लिए गए निर्णय के आलोक में कुड़ुख भाषा की परीक्षा तोलोंग सिकी लिपि में लिखने की अनुमति वार्षिक माध्यमिक परीक्षा, 2016 से प्रदान की जाती है।

तोलोंग सिकी लिपि में लिखने वाले परीक्षार्थी अपनी उत्तरपुस्तिका में लिपि संबंधी कॉलम में "तोलोंग सिकी" अवश्य लिखेंगे।

अध्यक्ष के आदेश से,

सचिव

ज्ञापांक : JAC/गुमला/16095/12-0607/16 झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची। राँची, दिनांक : 12/02/16

प्रतिलिपि : अध्यक्ष के निजी सहायक/उपाध्यक्ष के निजी सहायक/सचिव के निजी सहायक/संयुक्त सचिव के निजी सहायक/उपसचिव के निजी सहायक/गठित समिति के सभी सदस्यों को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित।

सचिव

ज्ञापांक : JAC/गुमला/16095/12-0607/16 झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची। राँची, दिनांक : 12/02/16

प्रतिलिपि : सचिव, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड/निदेशक (मा० शि०)' को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ समर्पित।

सचिव
झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ उच्च विद्याालय, मंगलो, सिसई, गुमला के शिक्षक, छात्र एवं विद्यालय भवन, जहाँ कुँड़ुख़ भाषा की नींव को मजबूती मिली तथा झारखण्ड सरकार से लिखने–पढ़ने की मान्यता।

3- fnukd 20 Qjojh 2016 dk Rkkyk³ flfd mYyk ¼fnol½] राजकीयकृत मध्य विद्यालय छारदा, सिसई, गुमला के प्रांगन में मनाया गया। यह कार्यक्रम, अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (स्वंय सेवी संस्था), कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ उच्च विद्यालय, मंगलो एवं राजकीयकृत कार्तिक उच्च विद्यालय, छारदा के जनसहयोग से आयोजित किया गया था। इस दिवस में बतौर मुख्य अतिथि शिक्षाविद एवं कुँड़ुख़ भाषा के विद्वान विशप डॉ0 निर्मल मिंज उपस्थित थे। विशप मिंज ने अपने संबोधन में कहा – (1) अक्कु गूटी कुँड़ुख़ कत्था ख़ेबदा नु मेंदेरआ लगिया एकला, मुन्दा अक्कु ईद ख़न्न गे एथेरओ। नेड़्डा 12.02.2016 गे झारखण्ड सरकार तरती झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची, मैट्रिक परीक्षा 2016 ती कुँड़ुख़ विषय ही परीक्षा तोलोङ सिकि (लिपि) नु लिखआ गे अनुमति चिच्चा। अक्कु नाम उज्जना–ओक्कना नु कुँड़ुख़ कत्थन कछनखरआ अरा तंगआ चिनहाँ तुरू टू:ड़ा ओङगोत। बरा नाम अक्कु कुँड़ुख़ कत्थन टू:ड़ोत–बचओत दरा ए:दना जो:गे कमओत। (2) एका बा:री नमन देवनागरी लिपि ती तंगआ अयंग कत्थन टूड़ना मनो, आ बा:री नाम अदिन कुँड़ुख़ घोख बेसे टू:ड़ोत, तबेम नमहँय उबार रअ्ई। नमूद गे – एङहय, निङहय, धरमे, करमा, बयना, मयना, कय्र, नउड़ा, डउड़ा, कव्ड़ी, बव्ग, भँवरो, नव्र, चँव्र, चँव्रा–भँव्रा गुट्ठी।

मुख्य वक्ता के रूप में तोलोङ सिकि (लिपि) के संस्थापक डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', अखिल भारतीय तोलोङ सिकि प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा एवं संयुक्त सचिव

श्री फिलमोन टोप्पो, मांडर के पूर्व विधायक श्री विश्वनाथ भगत, अद्दी अखड़ा के कोषाध्यक्ष श्री मंगरा उराँव, पड़हा कोटवार श्री गजेन्दर उराँव तथा जमशेदपुर से आये मेहमान श्रीमती बिलचो लकड़ा आदि कई गनमान्य व्यक्तियो ने कुँड़ुख़ कत्था एवं तोलोङ सिकि की आवश्यकता एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर जनसाधारण को सूचना दी गई कि – दिनांक 12.02. 2016 को झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची द्वारा कुँड़ुख़ भाषा पत्र की परीक्षा तोलोंग सिकि लिपि में लिखे जाने की अनुमति मिली है। स्थानीय लोगों में सिसई प्रखण्ड के प्रमुख श्री देवेन्द्र उराँव, उपप्रमुख श्री दीपक देवघरिया, छारदा पंचायत की मुखिया एवं स्थानीय पड़हा पंच के पदाधिकारी मौजूद थे। इस अवसर पर कार्तिक उराँव आदिवासी कुँड़ुख़ उच्च विद्यालय, मंगलो, पड़हा धुमकुड़िया कुँड़ुख़कत्थ लूरमंडा, छोटकासैन्दा, नव प्राथमिक विद्यालय नीचेटोली छारदा, जय सरना उच्च विद्यालय, देवाकी, घाघरा, नवीन डोमन थियोलोजिकल कॉलेज, इटकीमोड़, राँची आदि विद्यालय छात्र–छात्राएँ उपस्थित थे। सभा का शुभारंभ, राजकीयकृत मध्य विद्यालय छारदा की शिक्षिका के स्वागत भाषण से हुआ। सभा का संचालन श्री बिनोद भगत 'हिरही' के द्वारा सम्पन्न हुआ। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए अद्दी अखड़ा के सदस्य श्री राजेन्द्र उराँव ने कुँड़ुख़ समाज के अगुओं तथा झारखण्ड सरकार के नेताओं एवं अधिकारियों को, विशेष रूप से मानव संसाधन विकास विभाग, राँची एवं झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची के पदाधिकारियों का आभार व्यक्त किया तथा उन्हें इस ऐतिहासिक कार्य के लिये धन्यवाद ज्ञापित किया।

4. दिनांक 21.02.2016, दिन रविवार को 52 iMgk Xkke lHkk fcl|lUnjk के सदस्यों द्वारा ग्राम छोटकासैन्दा, सिसई, गुमला में पड़हा कोटवार श्री गजेन्द्र उराँव के संयोजन में बैठक हुई। बैठक में झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची द्वारा दिनांक 12.02.2016 को कुँड़ुख़ भाषा पत्र की परीक्षा तोलोङ सिकि (लिपि) में लिखे की अनुमति प्रदान किये जाने पर कुँड़ुख़ समाज के लोगों ने सरकार का आभार व्यक्त किया। समाज के चिंतनशील व्यक्तियों ने, झारखण्ड विधान सभा के अध्यक्ष श्री दिनेश उराँव, मुख्यमंत्री, श्री रघुवर दास, मानव संसाधन विकास मंत्री, डॉ0 (श्रीमती) नीरा यादव, प्रधान सचिव, श्रीमती अराधना पटनायक एवं झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची के अध्यक्ष, श्री अरविन्द कुमार सिंह को इस कार्य के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। साथ ही ''अद्दी अखड़ा (रजि0) एवं अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, राँची (संस्था) के सदस्यों एवं विशिष्ट रूप से डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' (तोलोङ सिकि के संस्थापक), वरीष्ठ पत्रकार श्री किसलय जी (लिपि का फोन्ट निर्माण) एवं फा0 अगस्तिन केरकेट्टा को समाज की ओर से धन्यवाद ज्ञापित किया गया, जिनके सार्थक प्रयास से कुँड़ुख़ भाषा को इस उँचाई तक पहुँचाने में सफलता हासिल हुई।

5. दिनांक 22.02.2016 को डॉ0 रामदयाल मुण्डा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, मोरहाबादी राँची के सभागार में तोलोङ सिकि सम्मान सह कुँड़ुख़ भाषा जनजागृति समारोह सम्पन्न हुआ। यह समारोह, झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची द्वारा दिनांक 12.02.2016 को कुँड़ुख़ भाषा पत्र की परीक्षा तोलोङ सिकि (लिपि) में लिखे जाने की अनुमति प्रदान किये जाने के पर समाज द्वारा, सरकार का आभार व्यक्त करने के उदेश्य से आयोजित किया गया था। मुख्य रूप से इसका आयोजन अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (रजि0) एवं अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, राँची (केन्द्रीय कार्यालय) तथा कुँड़ुख़ समाज के लोगों द्वारा किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि >kj[k.M fo/kku lHkk] v/;{k] ik0 fnus'k mjk¡o, विशिष्ट अतिथि डॉ0 करमा उराँव, डॉ0 रविन्द्र नाथ भगत, डॉ0 विशप निर्मल मिंज, आदिवासी कल्याण आयुक्त श्री गौरीशंकर मिंज, वरीय पत्रकार श्री किसलय जी एवं श्री बंधन तिग्गा उपस्थित थे। सभी वक्ताओं ने तोलोंग सिकि (लिपि) में परीक्षा लिखे जाने की अनुमति प्रदान किये जाने के लिए झारखण्ड सरकार एवं शिक्षा विभाग का आभार व्यक्त किया और इसे कुँड़ुख़ समाज के लिए एक उपलब्धि की बात कही। इस अवसर पर शिक्षाविद एवं कुँड़ुख़ भाषा के विद्वान विशप डॉ0 निर्मल मिंज ने अपने संबोधन में कहा कि – (1) अक्कु गूटी कुँड़ुख़ कत्था ख़ेबदा नु मेंदेरआ लगिया एकला, मुन्दा अक्कु ईद ख़न्न गे एथेरओ। नेड़्डा 12.02.2016 गे झारखण्ड सरकार तरती झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची, मैट्रिक परीक्षा 2016 ती कुँड़ुख़ विषय ही परीक्षा तोलोङ सिकि (लिपि) नु लिखआ गे अनुमति चिच्चा। अक्कु नाम उज्जना–ओक्कना नु कुँड़ुख़ कत्थन कछनखरआ अरा तंगआ चिनहाँ तुरू टूःड़ा ओङगोत। बरा नाम अक्कु कुँड़ुख़ कत्थन टूःड़ोत–बचओत दरा एःदना जोःगे कमओत। (2) एका बाःरी नमन देवनागरी लिपि ती तंगआ अयंग कत्थन टूड़ना मनो, असन नाम अदिन कुँड़ुख़ घोख बेसे टूःड़ोत, तबेम नमहँय उबार रअ्ई। (3) कुँड़ुख़ समाज के लिये rkyks³ flfd की रचना करने वाले डॉ0 नारायण उराँव को राँची विश्वविद्यालय की ओर से Mh0fyV0 dh mikf/k प्रदान हो, इसके लिए सामाजिक सह प्रशासनिक प्रयास किया जाना चाहिए। प्रोफेसर डॉ0 करमा उराँव ने कहा कि अब समय आ गया है कि हम सभी मिलकर संविधान की आठवीं सूची में कुँड़ुख़ भाषा को शामिल करवाने हेतु कार्य करें। डॉ0 रविन्द्र नाथ भगत ने कहा कि कुँड़ुख़ भाषा के प्रचार–प्रसार हेतु कुँड़ुख़ भाषा सप्ताह मनाया जाय तथा जगह–जगह पर अलग–अलग कार्यक्रम आयोजित किये जाएँ। माननीय विधायक, गुमला श्री शिवशंकर उराँव ने कहा कि तोलोङ सिकि, एक सामाजिक सह सांस्कृतिक आधार वाली लिपि है, अतएव भाषा–संस्कृति के संरक्षण तथा संवर्द्धन के लिए तोलोङ सिकि को अपनाना ही पड़ेगा। आदिवासी कल्याण आयुक्त श्री गौरी शंकर मिंज ने कहा कि कल्याण विभाग ही ओर से संचालित विद्यालयों में तोजोंग सिकि से पढ़ाई आरंभ करने की व्यवस्था आरंभ की जाएगी, इसके लिए 1ली से 3री कक्षा तक पुस्तक की छपाई की जाएगी। राजी पड़हा सरना प्रार्थना सभा के धरम गुरू श्री बंधन तिग्गा ने कहा कि धुमकुड़िया के माध्यम से तोलोंग सिकि में पढ़ाई–लिखाई की जाएगी। मुख्य अतिथि प्रो0 दिनेश उराँव ने कहा – मुझे अत्यंत खुशी हो रही है कि यह महती कार्य का शुभारंभ, संयोग से मेरे विधान सभा क्षेत्र से हुआ है। अतएव इस कार्य में मैं भी आप सबों के साथ

जुड़ा हुआ हूँ। इसके विकास में मेरी आवश्यकता जहाँ भी होगी वहाँ मैं समाज के साथ हूँ।

समारोह में लिपि के संस्थापक डॉ0 नारायण उराँव ने कहा – ''मैंने अपना कार्य पूरा किया, अब बारी, समाज के लोगों की है। समाज के लोग मिलकर इसे आगे ले चलें।'' मंच का संचालन श्री राजेन्द्र भगत द्वारा किया गया तथा धन्यवाद ज्ञापन अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा के केन्द्रीय अध्यक्ष फादर अगुस्तिन केरकेट्टा ने किया।

भाषा साहित्य विकास जागृति समारोह में बोले विधानसभा अध्यक्ष डॉ. दिनेश उरांव

तोलोंग सिकि को मान्यता मिलने से कुड़ुख को मिला भाषा का दर्जा

- मोरहाबादी के डॉ. रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान में किया गया समारोह का आयोजन
- 12 फरवरी को जैक ने अधिसूचना जारी कर परीक्षा में 'तोलोंग सिकि' लिपि में लिखने की अनुमति दी थी

सिटी रिपोर्टर | रांची

मोरहाबादी के डॉ. रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते विस अध्यक्ष।

आठवीं अनुसूची के लिए हो प्रयास : डॉ. करमा

स्कूलों के लिए उपलब्ध कराएं पुस्तकें : मिंज

आदिवासी समाज निभाए जिम्मेवारी : डॉ. नारायण

तोलोंग सिकि सम्मान सह कुडुख भाषा साहित्य विकास जागृति समारोह में स्पीकर ने कहा

अनमोल उपहार है तोलोंग सिकि लिपि

कार्यक्रम का आयोजन जनजातीय शोध संस्थान में किया गया था.

2084 गांवों में धुमकुड़िया है

गुमला में खुलेगा कुड़ुख रिसर्च इंस्टीट्यूट

आठवीं अनुसूची में शामिल करने की अर्हता पूरी हुई

6. दिनांक 08–09 मई 2016 को 52 पड़हा ग्रामसभा बिसु सेन्दरा का दो दिवसीय वार्षिक सम्मेलन ग्राम : बुड़का, थाना : सिसई, जिला : गुमला (झारखण्ड) में सम्पन्न हुआ। पड़हा बिसुसेन्दरा सम्मेलन में कुँड़ुख़ भाषा–संस्कृति की रक्षा एवं विकास के लिए कठोर निर्णय लिया गया। निर्णय में कहा गया कि सामुहिक प्रयास से कुँड़ुख़ भाषा की लिपि rkykx flfd को झारखण्ड सरकार द्वारा शिक्षा पद्धति में शामिल कर लिया गया, जिसके लिए सरकार के सभी लोग धन्यवाद के पात्र हैं। अब समाज की बारी है कि सभी मिलकर इसे अपने जीवन पद्धति में यानि पठन–पाठन में शामिल करें। इस सम्मेलन में स्वयं सेवी संस्था – अद्दी कुँड़ुख़ चाःला धुमकुड़िया पड़हा अखड़ा (अद्दी अख़ड़ा) के सचिव श्री जिता उराँव, कोषाध्यक्ष श्री बिपता उराँव, 52 पड़हा के बेल, देवान, कोटवार एवं ग्राम सभा के पहान, पुजार, महतो, करठा, गँवरो लोगों के साथ मिलकर परम्पारिक सामाजिक स्वशासन व्यवस्था को, वर्तमान परिस्थिति में व्यवहारिक बनाने की दिशा में ढाँचा तैयार किया गया।

7. दिनांक 21–22 मई 2016, दिन शनिवार एवं रविवार को dqM[k fyVjjh lkslk;Vh vkQ bfM;k का दोयता चान जतरा राँची विश्वविद्यालय राँची आर्यभट्ट सभागार में सम्पन्न हुआ। सोसायटी की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 उषा रानी मिंज, सचिव श्री नाबोर एक्का की उपस्थिति में मुख्य अतिथि विधान सभा अध्यक्ष श्री दिनेश उराँव, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष डॉ0 रामेश्वर उराँव, मानवशास्त्री डॉ0 करमा उराँव, पद्मश्री सिमोन उराँव, टी0आर0एल0 के अध्यक्ष डॉ0 के0सी टुडू आदि के उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। मंच संचालन श्री अशोक बखला ने किया।

05 • 22 मई 2016 हिन्दुस्तान रांची

कुड़ुख लिटरेरी सोसाइटी ऑफ इंडिया के दो दिवसीय दशक समारोह की शुरुआत

भाषाएं जोड़ने का काम करती हैं

राष्ट्रीय सम्मेलन

- कुड़ुख भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने में सहयोग देने का स्पीकर का आश्वासन
- मैट्रिक में टॉप करनेवाली कुड़ुख भाषा की छात्रा को 31,000 रुपए की पुरस्कार राशि देने की घोषणा
- सम्मेलन में 10 राज्यों के प्रतिनिधि के साथ नेपाल व बांग्लादेश के कुड़ुख भाषाविद ले रहे हिस्सा

पुस्तकों का विमोचन

प्रभात खबर | कैंपस/सिटी | रांची, रविवार 22.05.2016

आयोजन . कुड़ुख लिटररी सोसाइटी का समारोह शुरू, विधानसभा अध्यक्ष ने कहा

अपनी भाषा के प्रति श्रद्धा जरूरी

कुड़ुख लिटररी सोसाइटी ऑफ इंडिया का दशक समारोह शनिवार को आर्यभट्ट सभागार में शुरू हुआ. कार्यक्रम के पहले दिन कई विद्वानों ने विचार रखे.

संवाददाता ▸ रांची

कार्यक्रम में विधानसभा अध्यक्ष समेत कई अतिथियों ने रखे विचार.

- 'दोयता चान जतरा' सहित छह पुस्तकों का लोकार्पण
- आज निकलेगा जुलूस

कुड़ुख भाषा-संस्कृति वालों के लिए अपनी भाषा के प्रति श्रद्धा जरूरी है. अपनी भावी पीढ़ी को इसे धरोहर के रूप में सौंपने के लिए संस्थागत तरीके से विचार करने की आवश्यकता है. उक्त बातें विधानसभा अध्यक्ष अध्यक्ष दिनेश उरांव ने कही. वे शनिवार को आर्यभट्ट सभागार में कुड़ुख लिटररी सोसाइटी ऑफ इंडिया के दशक समरोह में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे.

श्री उरांव ने कहा कि कुड़ुख को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कराने की चिंता पूरे समाज की है. वह इसके लिए अपने स्तर से पूरा प्रयास करेंगे. जेपीएससी में जन जातीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं को समाहित करने की दिशा में भी आगे बढ़ रहे हैं. पहली बार तोलोंग सिकि लिपि में मैट्रिक की परीक्षा लिखने की अनुमति मिली है.इस लिपि के प्रति विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए वह इस साल ऐसे विद्यार्थियों में अव्वल आनेवाले को 31,000 रुपये देकर पुरस्कृत करेंगे. अनुसूचित जन जातीय आयोग के अध्यक्ष डॉ रामेश्वर उरांव ने कहा कि गांव-देहात में ही कुड़ुख को बचा कर रखा गया है. पढ़े-लिखे लोग सिर्फ हिंदी-अंग्रेजी में बात करते हैं. भाषा तभी बचेगी, जब इसमें साहित्य का सृजन होगा. पद्मश्री पद्दा राजा सिमोन उरांव ने कहा कि हमारे पुरखों ने भाषा, रीति-रिवाज सबको सहेज कर रखा, पर हम इन्हें छोड़ते जा रहे हैं. रांची विवि में सोशल साइंसेज के डीन डॉ करमा उरांव ने कहा कि कुड़ुख भाषियों का लेखन व साहित्य सृजन मजबूत होगा, तो भाषा भी सशक्त होगी. इससे पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ ऊषा रानी मिंज ने प्रतिभागियों का स्वागत किया. इस दौरान दशक समारोह की स्मारिका 'दोयता चान जतरा', महेश भगत की 'कुड़ुख भाषा, साहित्य और व्याकरण' व 'कुड़ुख भाषा का उदभव और विकास', डॉ नारायण उरांव की 'कुड़ुख भाषा की पारिभाषिक शब्दावली योजना', नेपाल से आये बेचन उरांव के संकलन 'कुड़ुख उरांव' और बंदि खलखो की 'पड़हा पत्रिका' (कार्तिक उरांव विशेषांक) का लोकार्पण किया गया. वर्धा विवि महाराष्ट्र में कुड़ुख-हिंदी के शब्दों का तुलनात्मक अध्ययन पर शोध करनेवाली गोल्ड मेडलिस्ट दीप्ति एक्का को भी सम्मानित किया गया. कुड़ख की संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कराने व स्कूलों में इसकी पढ़ायी प्राथमिक स्तर से शुरू करने की मांग को लेकर 22 मई को जिला स्कूल मैदान से आर्यभट्ट सभागार तक जुलूस निकाला जायेगा. कार्यक्रम में प्रो हरि उरांव, नाबोर एक्का, डॉ एचएन सिंह, भुवनेश्वर अनुज, अथनास टोप्पो, जॉन मिंज, नाबोर एक्का, बेचन उरांव, प्रो महेश भगत, शशि विनय भगत, गोरख नाथ तिर्की, अशोक बखला आदि मौजूद थे.

रांची LIVE | सिटी | Hindustan 23 May

कुड़ुख लिटररी सोसाइटी ऑफ इंडिया का दशक समारोह आयोजित, 12 राज्यों से जुड़े कुड़ुखभाषियों ने अपनी आवाज बुलंद की

'कुड़ुख भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करें'

रांची | प्रमुख संवाददाता

कुड़ुख भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने व झारखंड की तृतीय राजभाषा के रूप में इसकी पढ़ाई सभी प्राथमिक स्तर पर सभी कुड़ुख भाषी क्षेत्रों में सुनिश्चित करने की आवाज बुलंद की गई। रविवार कुड़ुख लिटररी सोसाईटी की ओर से आयोजित दो दिवसीय दशक समारोह संपन्न हुआ। 12 राज्यों से जुड़े कुड़ुखभाषियों ने इसके प्रचार-प्रसार और संरक्षण के हक में अपनी आवाज बुलंद की। साथ ही, तय हुआ कि इस वर्ष कुड़ुख भाषा का राष्ट्रीय सम्मेलन अलीपुर द्वार में आयोजित होगा।

प्रभातफेरी निकाली : कुड़ुख भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग को झारखंड समेत 12 राज्यों से आए प्रतिनिधियों ने प्रभातफेरी निकाली। प्रभातफेरी सुबह 9 बजे जिला स्कूल परिसर से निकली। कचहरी चौक, रेडियम रोड से गुजरती हुई प्रभातफेरी आयोजन स्थल मोरहाबादी स्थित आर्यभट्ट सभागार तक पहुंची। यह मांग भी गई कि झारखंड में तृतीय राजभाषा का दर्जा होते हुए भी कुड़ुख को वे सुविधाएं नहीं मिल रही हैं, जिसी यह हकदार है। साथ ही, राज्य के सभी कुड़ुखभाषी क्षेत्रों में प्राथमिक स्तर पर कुड़ुख की पढ़ाई शुरू करने की मांग की गई। जबकि, पायलट प्रोजेक्ट के तहत राज्य सरकार इस सत्र से गुमला से इसकी शुरुआत कर रही है। रैली में पश्चिम बंगाल की एक महिला प्रतिभागी की तबीयत बिगड़ गई।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियां हुईं : विभिन्न राज्यों से आए कलाकारों ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से भाषाई एकता को मजबूत करने का संकल्प दुहराया। दिल्ली, अंडमान, असम, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, बिहार, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, बिहार व झारखंड के अलावा नेपाल से आए कलाकारों ने अपनी रंगारंग प्रस्तुतियों से सांस्कृतिक छटा बिखेरी।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक हुई : राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक हुई। इसमें तय हुआ कि इस वर्ष अक्तूबर में कुड़ख भाषा का राष्ट्रीय सम्मेलन अलीपुर द्वार में होगा। कुड़ख को आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए सभी 12 राज्यों के प्रतिनिधि अपने राज्यों के मुख्यमंत्री व राज्यपाल की ओर से केंद्र सरकार को ज्ञापन भिजवाएंगे। यह निर्णय भी लिया गया कि कुड़ुख की शोध पत्रिका 'कुड़ुख डहरे' का मासिक प्रकाशन किया जाएगा। अक्तूबर में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन कुड़ुख के वृहद निबंध साहित्य के विमोचन का निर्णय लिया गया। मौके पर डॉ उषा रानी मिंज, डॉ हरि उरांव, महेश भगत, प्रो चौठी उरांव, प्रो प्रवीण उरांव, डॉ सविता उरांव, प्रो महामणि उरांव, प्रो मंती उरांव व डॉ आभा खलखो मौजूद थे।

कुड़ुख को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर प्रभातफेरी निकाली।

रविवार की शाम विभिन्न राज्यों से आए कलाकारों ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से भाषाई एकता को मजबूत करने का संकल्प लिया।

Khabar Mantra 23 May

कुड़ुख भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग पर निकाली प्रभात फेरी

■ दो दिनी कुड़ख लिटररी सोसाइटी का दशक समारोह संपन्न

रांची। भारत के 13 राज्य के उरांव समुदाय के लोगों ने कुड़ुख भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर सुबह जिला स्कूल परिसर से प्रभात फेरी निकाली। यह फेरी कचहरी, रेडियम रोड होते आर्यभप्त सभागार पहुंची। कुड़ुख लिटरेरी सोसाइटी ऑफ इंडिया की ओर से निकाली गयी रैली में उरांव समुदाय के लोग हुए और अपनी मांग रखी। डॉ हरि उरांव ने बताया कि कुड़ुख भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने के उद्देश्य से पिछले दस वर्षों से काम किया जा रहा है। सभी अर्हताएं पूरी करता है यह भाषा। इसे बोलने वालों की संख्या लगभग 50 लाख है। साहित्य की कोई कमी नहीं है। सरकार से हमारी मांग है कि कुड़ुख भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करे। प्रभात फेरी के बाद आर्यभप्त सभागार में भाषा के विकास, संरक्षण, संवर्द्धन पर चर्चा हुई। सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये। मौके पर अध्यक्ष डॉ उषा रानी मिंज, नबोर एक्का, महेश भगत, अशोक बखला सहित अन्य उपस्थित थे।

8. दिनांक 29 मई 2016, दिन रविवार को कुँडुख़ (उराँव) भाषा के विकास हेतु कुँडुख़ भाषी बुद्धिजीवियों द्वारा rkyk³ flfd dqM[k ¼mjk¡o½ Hkk"kk VsDLVcqd dfefV का गठन किया गया। यह बैठक, कमिटि कार्यालय – लॉन व्यू , मकान संख्या 10, करमटोली चौक, मोरहाबादी, राँची में हुई। बैठक में, सभी संबंधित विषयों पर गंभीरता पूर्वक विचार करते हुए टेक्स्टबुक कमिटि के प्रस्ताव को अनुमोदित कर सबों से हस्ताक्षर लिया गया। कमिटि इस प्रकार है :– अध्यक्ष – डॉ0 रामकिशोर भगत, उपाध्यक्ष – श्री बिपता उराँव, सचिव – श्री जिता उराँव, उपसचिव– श्री बहुरा उराँव, कोषाध्यक्ष – श्री फिलमोन टोप्पो, उपकोषाध्यक्ष – श्री बिनोद भगत 'हिरही', सदस्य – डॉ0 नारायण भगत, फा0 अगस्तिन केरकेटटा, श्री सरन उराँव, श्री मनोरंजन लकड़ा, डॉ0 नारायण उराँव, श्री लोधेर उराँव, श्री किसुन उराँव, श्री नागराज उराँव, श्री भुनेश्वर उराँव (तोलोङ सिकि ट्रेनर) एवं श्री किसलय (तोलोङ सिकि का कम्प्यूटर फोन्ट निर्माता, मनोनित सदस्य)।

तोलोङ सिकि कुँडुख (उराँव) भाषा टेक्स्टबुक कमिटि, झारखण्ड, राँची

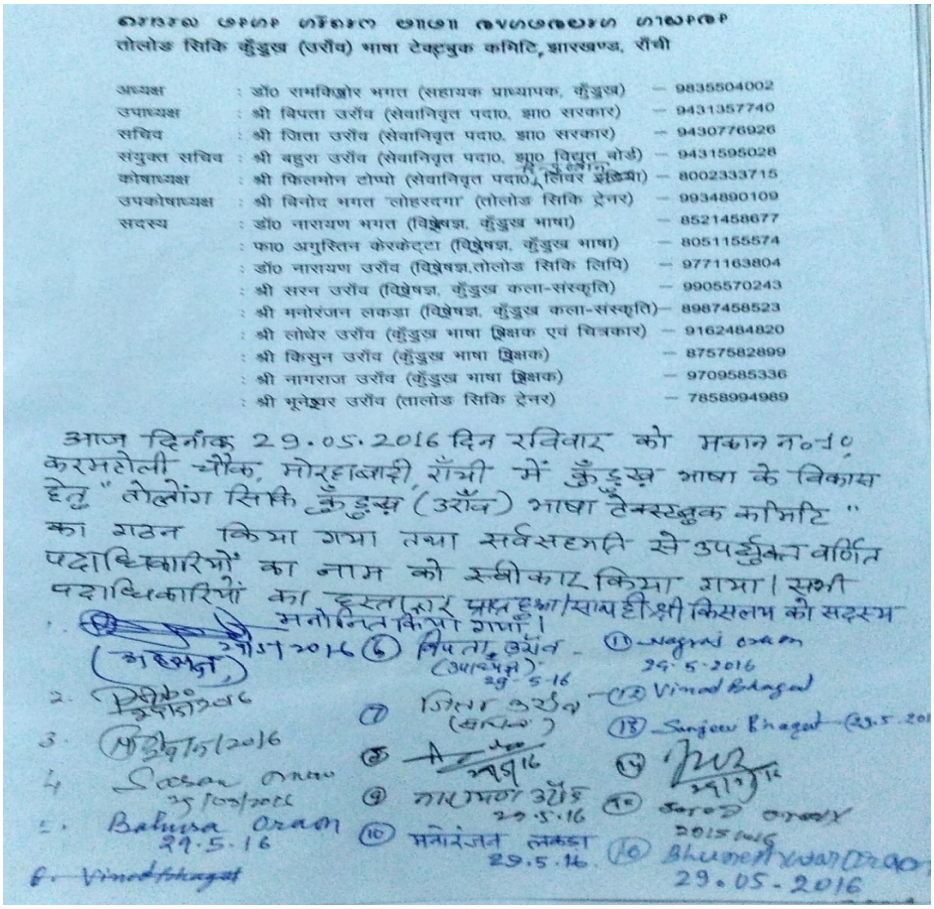

अध्यक्ष	: डॉ0 रामकिशोर भगत (सहायक प्राध्यापक, कुँडुख)	– 9835504002
उपाध्यक्ष	: श्री बिपता उराँव (सेवानिवृत पदा0, झा0 सरकार)	– 9431357740
सचिव	: श्री जिता उराँव (सेवानिवृत पदा0, झा0 सरकार)	– 9430776926
संयुक्त सचिव	: श्री बहुरा उराँव (सेवानिवृत पदा0, झा0 विद्युत बोर्ड)	– 9431595028
कोषाध्यक्ष	: श्री फिलमोन टोप्पो (सेवानिवृत पदा0, लिवर इंडिया)	– 8002333715
उपकोषाध्यक्ष	: श्री बिनोद भगत 'लोहरदगा' (तोलोङ सिकि ट्रेनर)	– 9934890109
सदस्य	: डॉ0 नारायण भगत (विशेषज्ञ, कुँडुख भाषा)	– 8521458677
	: फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा (विशेषज्ञ, कुँडुख भाषा)	– 8051155574
	: डॉ0 नारायण उराँव (विशेषज्ञ,तोलोङ सिकि लिपि)	– 9771163804
	: श्री सरन उराँव (विशेषज्ञ, कुँडुख कला-संस्कृति)	– 9905570243
	: श्री मनोरंजन लकड़ा (विशेषज्ञ, कुँडुख कला-संस्कृति)	– 8987458523
	: श्री लोधेर उराँव (कुँडुख भाषा शिक्षक एवं चित्रकार)	– 9162484820
	: श्री किसुन उराँव (कुँडुख भाषा शिक्षक)	– 8757582899
	: श्री नागराज उराँव (कुँडुख भाषा शिक्षक)	– 9709585336
	: श्री भुनेश्वर उराँव (तोलोङ सिकि ट्रेनर)	– 7858994989

आज दिनांक 29.05.2016 दिन रविवार को मकान नं0-10 करमटोली चौक, मोरहाबादी, राँची में कुँड़ुख़ भाषा के विकास हेतु " तोलोंग सिकि कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा टेक्स्टबुक कमिटि " का गठन किया गया तथा सर्वसहमति से उपर्युक्त वर्णित पदाधिकारियों का नाम को स्वीकार किया गया। सभी पदाधिकारियों का हस्ताक्षर प्राप्त हुआ। साथ ही श्री किसलय को सदस्य मनोनित किया गया।

1. (अध्यक्ष) 29/5/2016
2. 29/5/2016
3. 29/5/2016
4. Saran Oraon 29/05/2016
5. Bahura Oram 29.5.16
6. Vinod Bhagat
(6) बिपता उराँव (उपाध्यक्ष) 29-5-16
(7) जिता उराँव (सचिव)
(8) 29/5/16
(9) नारायण उराँव 29.5.16
(10) मनोरंजन लकड़ा 29.5.16
(11) Nagraj Oraon 29.5.2016
(12) Vinod Bhagat
(13) Sanjeev Bhagat 29.5.2016
(14) 29/5/16
(15) Sarod Oraon 2015/16
(16) Bhuneshwar Oraon 29.05.2016

9- fnukd 12-06-2016] दिन रविवार को ग्राम सियांग, थाना – सिसई, जिला – गुमला (झारखण्ड) के उराँव (कुँड़ुख़) आदिवासी समाज ने अपनी ijEijkxr f'k{kk dsUnz /kedfM;k का शुभारंभ किया। इस अवसर पर तोलोंग सिकि के संस्थापक, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं उनके साथी अद्दी अखड़ा, संस्था, राँची के कोषाध्यक्ष श्री बिपता उराँव ने वर्तमान समय में परम्परागत शिक्षा केन्द्र, धुमकुड़िया की आवश्यकता एवं उपयोगिता के बारे में विस्तार पूर्वक बतलाया। डॉ0 उराँव ने कहा कि – जिस समय हमारे पूर्वजों के पास स्कूल–कॉलेज, थाना–पुलिस, कोर्ट–कचहरी, मंदिर, मस्जिद, गिरजा आदि कुछ भी नहीं पँहुचा था, उस समय हमारे पूर्वज, जिन शक्तियों के बल पर हमें संजोकर रखा, उन शक्तियों को समझने की आवश्यकता है। एक सभ्य समाज के प्रत्येक मनुष्य को – रोटी, कपड़ा, मकान और स्वास्थ्य, शिक्षा तथा अध्यात्म की आवश्यकता होती है। रोटी, कपड़ा, मकान आवश्यक आवश्यकता की पूर्ती, मनुष्य व्यक्तिगत रूप से कर लेता है, किन्तु अन्य तीन यानि स्वास्थ्य, शिक्षा तथा अध्यात्म की आवश्यकता की पूर्ती हेतु सामूहिक रूप से मिल–बैठकर पूरा करना होता है। उराँव (कुँड़ुख़) समाज के पूर्वजों ने भी इन आवश्यकताओं की पूर्ती हेतु उपाय खोज रखे थे। हमारे पूर्वजों की वे शक्तियाँ थीं – 1. पड़हा 2. धुमकुड़िया 3. अखड़ा 4. ग्राम सभा 5. चाःला अयंग 6. देवती अयंग 7. बिसु सेन्दरा। इन शक्तियों को जोड़कर, हम सबों के पूर्वज हमलोगों को यहाँ तक लाये, किन्तु वर्तामान में हमने अपने पूवर्जों की इन पहरेदार शक्तियों को छोड़ दिया है और समय की दौड़ में दिशाहीन नजर आ रहे हैं।

हम आदिवासियों को फिर से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ती के सामूहिक तरीके को अपनाना होगा। हमें शिक्षा के परम्परागत तरीके को फिर से मुल्यांकन करना होगा। हमारे पूर्वजों के समय में, सिर्फ श्रुति साहित्य ही विकसित थी, अतएव धुमकुड़िया में सिर्फ बोलकर या गाकर या किसी कार्य को सम्पन्न कर सिखलाया जाता था। वर्तमान स्कूल में बोलकर या गाकर सीखने के साथ–साथ लिखकर सिखलाये जाने की भी व्यवस्था है। इस नई विधा ने, परम्परागत व्यवस्था को नजर अंदाज कर दिया। अब हमें, इस नई व्यवस्था अर्थात लिखने–पढ़ने की विधा को धुमकुड़िया के साथ जोड़ना होगा। हमारे बच्चे, आधुनिक स्कूल में, हिन्दी पढ़ेंगे, अंगरेजी पढ़ेंगे और अपनी मातृभाषा (कुँड़ुख़) भी पढ़ेंगे। झारखण्ड सरकार, हमारी भाषा–संस्कृति की सुरक्षा हेतु मातृभाषा में पढ़ाई–लिखाई की व्यवस्था कर रही है और सभी नौकरियों में मातृभाषा को स्थान दिया जा रहा है। ऐसे में हमें अपनी परम्परागत व्यवस्था को फिर से मुल्यांकन कर यथोचित स्थान देना ही होगा।

पूर्व में राजा–राजवाड़ों के क्षेत्र में गुरूकूल (आश्रम) हुआ करता था, जहाँ सिर्फ राजपरिवार या उनके निकट संबंधी ही शिक्षा ग्रहण करते थे। आम लोगों के लिये शिक्षा ग्रहण करने की कोई सामान्य व्यवस्था नहीं थी, किन्तु हमारे पूर्वजों ने प्रत्येक गाँव एवं टोला में परम्परागत शिक्षा केन्द्र, धुमकुड़िया खोल रखा था। शायद यह दुनिया में अनोखी पाठशाला थी। राज्य सरकार इस अनोखी पाठशाला को आर्थिक मदद करे। इस संबंध में पद्मश्री डॉ0 रामदयाल मुण्डा कहा करते थे – जब ले सउब गाँव कर अखड़ा अउर धुमकुड़िया नी जागी तब ले हामर आदिवासी समाज कर विकास अधुरा रही। से ले हर गाँव में ए गो चाही अउर अखड़ा जगन धुमकुड़िया अखड़ा होवेक। संगहे, हर धमकुड़िया में ए गो पुस्तकालय अउर प्राथमिक उपचार कर साधन होवेक चाही। डॉ0 मुण्डा जी का यह सपना शायद सियांग वासियों ने साकार करने का प्रयत्नकिया है जो समय की मांग है।

अपनी सांस्कृतिक धरोहर को बचाकर रखने के संबंध में जादवपुर यूनिवर्सिटी, कोलकता dh प्रोफेसर, भाषाविद् डॉ0 मॉहिदास भट्टाचार्य का कहना है – *किसी भाषा के सम्पूर्ण विकास के लिए उसे नेत्र ग्राह्य रूप यानि उसकी अपनी लिपि का होना आवश्यक है। वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में यूनिवर्सल सिस्टम को अपनाते हुए, अपनी सांस्कृतिक धरोहर को बचाये रखने के लिए अपनी मातृभाषा की शिक्षा आवश्यक है।*

कुँड़ुख़ भाषा की लिपि भी विकसित हो चुकी है, जिसका इसका नाम rkykx flfd है। इस लिपि का कम्प्यूटर वर्जन, केलितोलोंग फॉन्ट, newswing.com में निशुल्क उपलब्ध है।

सियांग गाँव वाले भी Hkk"kk;h /kjkgj dk lajf{kr ,oa lajf{kr करने की दिशा में तोलोंग सिकि (लिपि) की पढ़ाई धुमकुड़िया के माध्यम से आरंभ कर चुके हैं। धुमकुड़िया उद्घाटन के अवसर पर गाँव के पहान, पुजार, महतो एवं पड़हा पंच के साथ श्री लोहरा उराँव, श्री जतरू उराँव, श्री बुधराम उराँव, श्री चमरा उराँव, पड़हा कोटवार श्री गजेन्दर उराँव, श्री कैलाश उराँव, सिसई प्रखण्ड के प्रमुख श्री देवेन्द्र उराँव एवं गाँव के बहुत से युवक–युवतियाँ उपस्थित थे।

10- [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

11- ,d lkekftd ?kks"k.kk & fnukad 12 Qjojh ls 20 Qjojh rd ^^dqM+[k Hkk"kk lIrkg** euk;k tk,xkA

दिनांक 26 tu 2016] दिन रविवार को ekuuh; fo/kk;d Jh f'ko'kadj mjk¡o] गुमला की अध्यक्षता में एक बैठक हुई। इस बैठक में दिनांक 22.02.2016, दिन मंगलवार को डॉ0 रामदयाल मुण्डा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, मोरहाबादी राँची के सभागार में तोलोङ सिकि सम्मान सह कुँड़ुख़ भाषा जनजागृति समारोह में कुँड़ुख़ भाषा के प्रचार–प्रसार हेतु कुँड़ुख़ भाषा सप्ताह मनाये जाने के सुझाव के आलोक में परिचर्चा कर उपस्थित सभी भाषा प्रेमियों ने 12 Qjojh ls 20 Qjojh तक ^^dqM+[k Hkk"kk lIrkg** मनाये जाने के सामाजिक निर्णय का स्वागत किया। इस अवसर पर माननीय विधायक ने तोलोङ सिकि सम्मान समारोह में दिये गये अपने वक्तव्य को दुहराते हुए कुँड़ुख़ भाषा और तोलोङ सिकि की अन्योन्याश्रयता के संबंध में कहा कि तोलोङ सिकि एक सामाजिक सह सांस्कृतिक आधार वाली लिपि है। इसलिए भाषा–संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु तोलोङ सिकि को अपनाना ही होगा। ज्ञात हो कि कुँड़ुख़ भाषा सप्ताह मनाये जाने हेतु, विनोवा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग के पूर्व कुलपति, प्रोफेसर Mk0 jfoUnz ukFk Hkxr के सुझाव पर, कई सामाजिक बैठक के पश्चात्, समाज की ओर से यह निर्णय लिया गया है। निर्णयानुसार, 12 फरवरी से 20 फरवरी के बीच अलग–अलग स्थानों में अलग–अलग कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे। सिसई, गुमला के प्रतिनिधियों एवं भाषा प्रेमियों ने ^^dqM+[k Hkk"kk lIrkg** का पहला दिन, दिनांक 12.02.2017 को सिसई में, दिनांक 20.02.2017 को लूरडिप्पा, भगीटोली में तथा दिनांक 18. 02.2017 को जय सरना उच्च विद्यालय, नवडिहा, घाघरा में मनाने का निर्णय लिया।

12- fnukad & 16-07-2016] दिन शनिवार को जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची के छात्र–छात्रा एवं अद्दी अखड़ा, संस्था के सदस्य, कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा का स्वतंत्र भाषा विभाग खोलने के लिए कुलपति डॉ0 रमेश कुमार पाण्डेय से मिले।

प्रभात खबर — रांची, रविवार 17.07.2016 — 06

कुड़ुख भाषा का अलग विभाग खोलने की मांग

प्रतिनिधिमंडल को रांची विवि के कुलपति से मुलाकात की.

संवाददाता ▸ रांची

रांची विवि में कुड़ुख भाषा का अलग विभाग खोलने की मांग अद्दी अखड़ा व उरांव/कुड़ुख भाषा छात्र संघ ने कुलपति से की है. कुलपति ने आश्वासन दिया है कि उनकी मांग से राज्य सरकार को अवगत कराया जायेगा. इस दिशा में समुचित कार्रवाई होगी. भय्या रमण कुजूर व तेतरू उरांव के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने कुलपति से मुलाकात कर शनिवार को कहा कि कुड़ुख भाषा के विद्यार्थियों की संख्या अन्य भाषा के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है. जनजातीय क्षेत्रीय भाषा विभाग के अंतर्गत कई विषयों की पढ़ाई होती है, जिसके कारण कुड़ुख भाषा की पढ़ाई नगण्य रूप में होती है, जबकि साहित्य काफी समृद्ध है. कुड़ुख भाषा के लिए अतिरिक्त पद सृजित करने की भी मांग की गयी. महाविद्यालयों में लगभग तीन हजार व स्नातकोत्तर विभाग में लगभग 200 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं. इस अवसर पर विवि की तरफ से रजिस्ट्रार डॉ एके चौधरी, एसटी/एससी सेल के अध्यक्ष सह डीन डॉ करमा उरांव, प्रॉक्टर डॉ दिवाकर मिंज व प्रतिनिधिमंडल में जिता उरांव, बहुरा उरांव, पंकज प्रकाश, शरण उरांव, बिपता उरांव, शिव उरांव, रेखा कुमारी, शैलेंद्र उरांव, वासुदेव उरांव, जयंतु मिंज सहित कई लोग उपस्थित थे.

13- fnukd & 07-08-2016] दिन रविवार को आदिवासी एकता मंच, लोहरदगा द्वारा लूथेरन उच्च विद्यालय परिसर में, कुँड़ुख़ कोचिंग क्लास का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन समारोह में डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', डॉ0 नारायण भगत, डॉ0 एतवा उराँव, श्री बिपता उराँव, श्री बिनोद भगत ''हिरही'', पादरी नेमहास एक्का, प्रधान अध्यापिका श्रीमती एवं छात्र–छात्राएँ उपस्थित हुए।

प्रभात खबर

कोचिंग क्लासेज का उदघाटन

लोहरदगा. आदिवासी एकता मंच, लोहरदगा द्वारा संचालित कुड़ुख कोचिंग क्लासेज का उदघाटन लुथरन एजुकेशनल एकेडमी, लोहरदगा में किया गया. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ नारायण उरांव व डॉ एतवा उरांव मौजूद थे. मौके पर डॉ नारायण उरांव ने कहा कि विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षा में कुड़ुख से प्रश्न पूछे जाते हैं, लेकिन कुड़ुख की पढ़ाई की व्यवस्था नीचे स्तर से नहीं होने के कारण विद्यार्थियों में कुड़ुख बोलने में झिझक रहती है. भाषा को तो समझ जाते हैं, किंतु बोलने व लिखने में परेशानी होती है. इसके कारण परीक्षार्थी सही उत्तर नहीं दे पाते हैं. उन्होंने कहा कि कुड़ुख भाषियों में झिझक दूर हो, इसके लिए कुड़ुख कोचिंग कलासेज शुरू किया गया है. यहां नियमित क्लास करने वाले परीक्षार्थियों को प्रतियोगिता परीक्षाओं में सहायता मिलेगी. मौके पर विनोद भगत ने कुड़ुख कोचिंग कलासेज के उद्देश्य की जानकारी देते हुए इसकी विशेषता बतलायी. मौके पर बड़ी संख्या में कुड़ुख भाषी छात्र -छात्राएं मौजूद थे.

जल निकासी नहीं होने से परेशानी

किस्को-लोहरदगा. प्रखंड के अधिकांश क्षेत्रों में इन दिनों जमाव की स्थिति बनी हुई है. नवाडीह पंचायत नारी गांव में रामदास राम के घर के बगल में गंदे पानी का जमाव काफी दिन से है. यहां नाला है, लेकिन पुल नहीं होने के कारण पानी जमा हो गया है. पूर्व में पीसीसी सड़क का निर्माण हुआ था. पुलिया के अभाव में जल निकासी नहीं हो पा रहा है. इससे बीमारी फैलने की आशंका बनी हुई है.

14- fnukd & 09-09-2016 को भारत सरकार, आदिवासी कार्य मंत्रालय द्वारा Standing Commitee for Tribal Welfare (SCTW) कमिटि में मानवशास्त्री डॉ0 करमा उराँव, सदस्य मनोनीत किये गये हैं। यह आदिवासी समाज के लिए खुशी की बात है। आदिवासी समाज की ओर से डॉ0 करमा उराँव को हार्दिक बधाई।

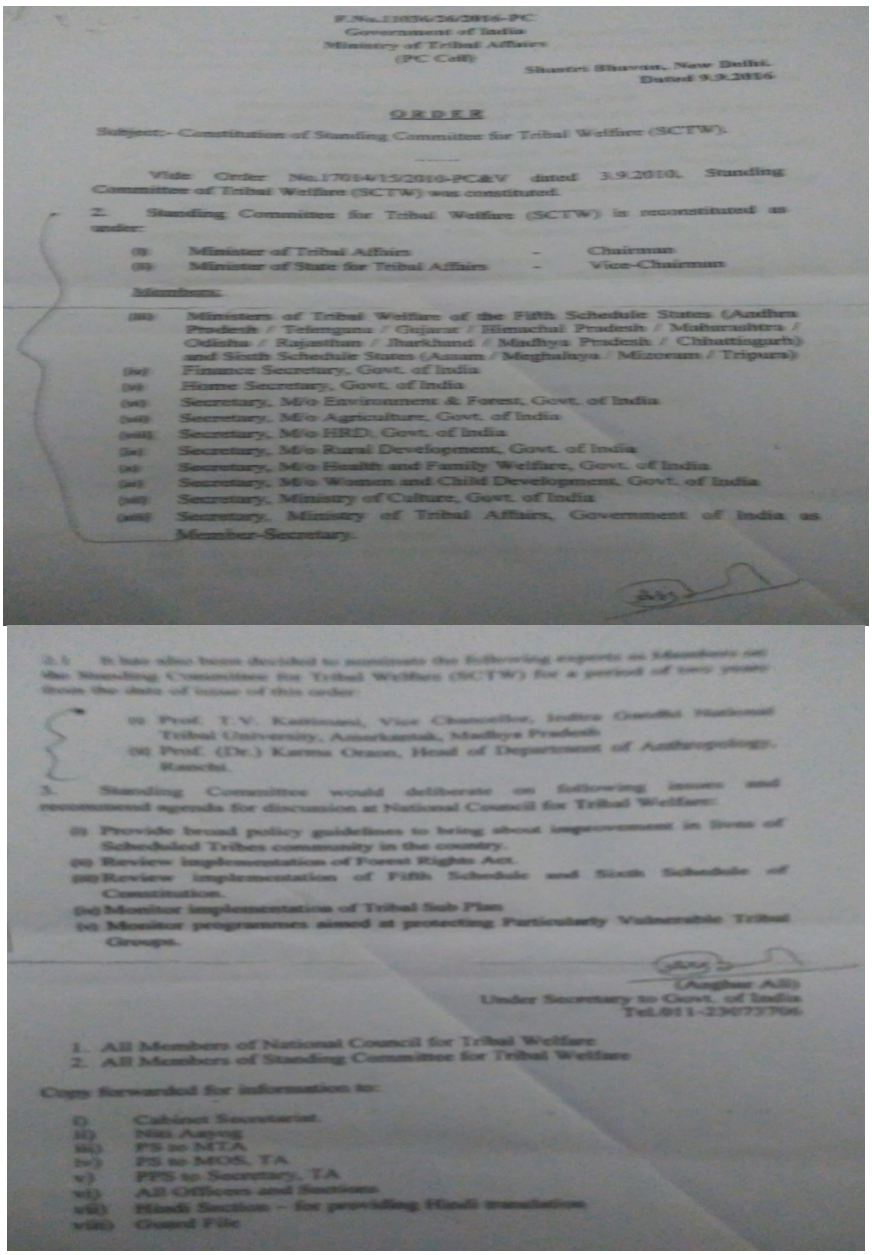

F.No.13036/26/2016-PC
Government of India
Ministry of Tribal Affairs
(PC Cell)
Shastri Bhavan, New Delhi.
Dated 9.9.2016

ORDER

Subject:- Constitution of Standing Committee for Tribal Welfare (SCTW).

Vide Order No.17014/15/2010-PC&V dated 3.9.2010, Standing Committee of Tribal Welfare (SCTW) was constituted.

2. Standing Committee for Tribal Welfare (SCTW) is reconstituted as under:

(i) Minister of Tribal Affairs - Chairman
(ii) Minister of State for Tribal Affairs - Vice-Chairman

Members:

(iii) Ministers of Tribal Welfare of the Fifth Schedule States (Andhra Pradesh / Telengana / Gujarat / Himachal Pradesh / Maharashtra / Odisha / Rajasthan / Jharkhand / Madhya Pradesh / Chhattisgarh) and Sixth Schedule States (Assam / Meghalaya / Mizoram / Tripura)
(iv) Finance Secretary, Govt. of India
(v) Home Secretary, Govt. of India
(vi) Secretary, M/o Environment & Forest, Govt. of India
(vii) Secretary, M/o Agriculture, Govt. of India
(viii) Secretary, M/o HRD, Govt. of India
(ix) Secretary, M/o Rural Development, Govt. of India
(x) Secretary, M/o Health and Family Welfare, Govt. of India
(xi) Secretary, M/o Women and Child Development, Govt. of India
(xii) Secretary, Ministry of Culture, Govt. of India
(xiii) Secretary, Ministry of Tribal Affairs, Government of India as Member-Secretary.

3. It has also been decided to nominate the following experts as Members of the Standing Committee for Tribal Welfare (SCTW) for a period of two years from the date of issue of this order:

(i) Prof. T.V. Kattimani, Vice Chancellor, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak, Madhya Pradesh
(ii) Prof. (Dr.) Karma Oraon, Head of Department of Anthropology, Ranchi.

4. Standing Committee would deliberate on following issues and recommend agenda for discussion at National Council for Tribal Welfare:

(i) Provide broad policy guidelines to bring about improvement in lives of Scheduled Tribes community in the country.
(ii) Review implementation of Forest Rights Act.
(iii) Review implementation of Fifth Schedule and Sixth Schedule of Constitution.
(iv) Monitor implementation of Tribal Sub Plan.
(v) Monitor programmes aimed at protecting Particularly Vulnerable Tribal Groups.

(Anghor Ali)
Under Secretary to Govt. of India
Tel.011-23073706

1. All Members of National Council for Tribal Welfare
2. All Members of Standing Committee for Tribal Welfare

Copy forwarded for information to:

i) Cabinet Secretariat.
ii) Niti Aayog
iii) PS to MTA
iv) PS to MOS, TA
v) PPS to Secretary, TA
vi) All Officers and Sections
vii) Hindi Section – for providing Hindi translation
viii) Guard File

15- fnukd & 11-09-2016] दिन रविवार को तोलोङ सिकि के संस्थापक, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' (बाएँ) एवं तोलोङ सिकि प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष, फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा (दाएँ) पद्मश्री सिमोन उराँव (बीच में) को उनके आवास पर ''पद्मश्री'' मिलने पर हार्दिक बधाई दी और गाँव–घर की सामाजिक समस्याओं एवं उससे छुटकारा पाने के उपायों पर विचार–विमर्श किया।

ineJh iMgk jktk fleku mjko dj eUrjk %& ?kj&?kj e Hkk"kk] [kr&[kr MkHkk] ijc e ifM+;k ¼fcuy y[kxk½] xko e yjdfM+;k Ixg /kedfM+;k ry Imc fey d cpm irjk vmj trjk] rcg Hkkxh vkfnokIh eudj [krjkA

16- fnukd & 12-09-2016] दिन सोमवार को तोलोङ सिकि के संस्थापक, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' (बाएँ) एवं तोलोङ सिकि प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष, फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा (दाएँ) पद्मश्री सिमोन उराँव (बीच में) को उनके आवास पर ''पद्मश्री'' मिलने पर हार्दिक बधाई दी और गाँव–घर की सामाजिक समस्याओं एवं उससे छुटकारा पाने के उपायों पर विचार–विमर्श की।

क्षेत्रीय भाषा विभाग में राज्यपाल द्रौपदी मुरमू ने कलाकारों का हौसला बढ़ाया।

17- fnukd & 18-09-2016] दिन रविवार को सामुदायिक भवन, सॉल्टलेक, कोलकाता में आयोजित एक दिवसीय समारोह मनाया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में तोलोंग सिकि के संस्थापक, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' उपस्थित थे।

18- fnukd & 30-09-2016] दिन शुक्रवार को कोयला नगर, धनबाद में आयोजित एक समारोह में डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' को कुँडुख़ भाषा में विशेष कार्य (कुँडुख़ भाषा की लिपि तोलोङ सिकि के विकास के लिए) किये जाने के लिए बी0सी0सी0एल0 के निदेशक (कार्मिक) एवं निदेशक (वित्त) द्वारा बी0सी0सी0एल0 कोयला भारती राजभाषा सम्मान 2016 प्रदान किया गया।

प्रभात खबर धनबाद अपडेट

धनबाद, शनिवार 1.10.2016

आज अंतराष्ट्रीय भाषा बन गयी है हिंदी : डीपी

धनबाद. हिंदी आज अंतरराष्ट्रीय भाषा बन चुकी है. राजभाषा पखवारा आयोजन का उद्देश्य है कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को अधिक से अधिक बढ़ाने का है, ताकि इसका प्रचार-प्रसार अधिक से अधिक हो सके. उक्त बातें बीसीसीएल के निदेशक (कार्मिक) विनय कुमार पंडा ने कही. वह शुक्रवार को कोयला नगर स्थिति सामुदायिक केंद्र में आयोजित बीसीसीएल राजभाषा पखवारा समापन सह पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे. मौके पर मुख्य अतिथि कथाकार नारायण सिंह, विशिष्ट अतिथि सह कुडुख भाषा विशेषज्ञ डॉ नारायण उरांव आदि थे. कंपनी की ओर से दोनों को कोयला भारती राजभाषा सम्मान दिया गया. पूरे पखवारा के विजयी प्रतिभागियों को भी सम्मानित किया गया. मौके पर निदेशक (वित्त) केएस राजशेखर, मुख्य महाप्रबंधक (समन्वय) आरएन प्रसाद, महाप्रबंधक (कुसुंडा) देवेंद्र प्रसाद, महाप्रबंधक (लोदना) पी चंद्रा, महाप्रबंधक (बस्ताकोला) पीके दुबे, महाप्रबंधक (सिविल) आरएम प्रसाद, महाप्रबंधक (खनन) ज्योतिष चंद्र व एसके सिंह, बी सिंह, आरआर प्रसाद के अलावा बड़ी संख्या में अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे.

19- fnuk~d & 01-10-2016] दिन शनिवार को डॉ0 नारायण उराँव, पाटलीपुत्र मेडिकल कॉलेज अस्पताल, धनबाद में कार्यरत अपने विभाग के विभागाध्यक्ष, अस्पताल के अधीक्षक एवं विशेषज्ञ चिकित्सकों की उपस्थिति में, बी0सी0सी0एल0 कोयला भारती राजभाषा सम्मान 2016 की ट्रॉफी के साथ। चित्र में दायें से कुर्सी में बैठे हुए – सीनियर रेजिडेन्ट डॉ0 नारायण उराँव, अस्पताल के अधीक्षक डॉ0 आर0 के0 पाण्डेय, शिशु रोग विभाग के प्रोफेसर डॉ0 आर0 एस0 पी0 सिन्हा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर डॉ0 के0 के0 चौधरी, सीनियर रेजिडेन्ट डॉ0 अविनाश कुमार तथा पीछे खड़े हुए जूनियर रेजिडेन्ट डॉ0 राजकपूर सोनी एवं डॉ0 अभिजीत अशोक झा।

20- fnuk~d & 04-10-2016 : राँची विश्वविद्यालय राँची के केन्द्रीय पुस्तकालय में आयोजित एक दिवसीय कुँड़ुख़ भाषा सम्मेलन सह सेमिनार डॉ0 करमा उराँव 'की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस सेमिनार के मुख्य अतिथि, विधान सभा अध्यक्ष डॉ0 दिनेश उराँव थे। सेमिनार में अति विशिष्ट अतिथि, कुलपति डॉ0 रमेश कुमार पाण्डेय ने कहा कि राँची विश्वविद्यालय का स्नातक जब पड़ोसी राज्य में जाता है तो उसे मान्यता नहीं मिलती है। अतएव, अब यहाँ भी आदिवासी

भाषा की लिपि की पढ़ाई होगी, जिसकी आरंभिक अधिसूचना जारी हो चुकी है।

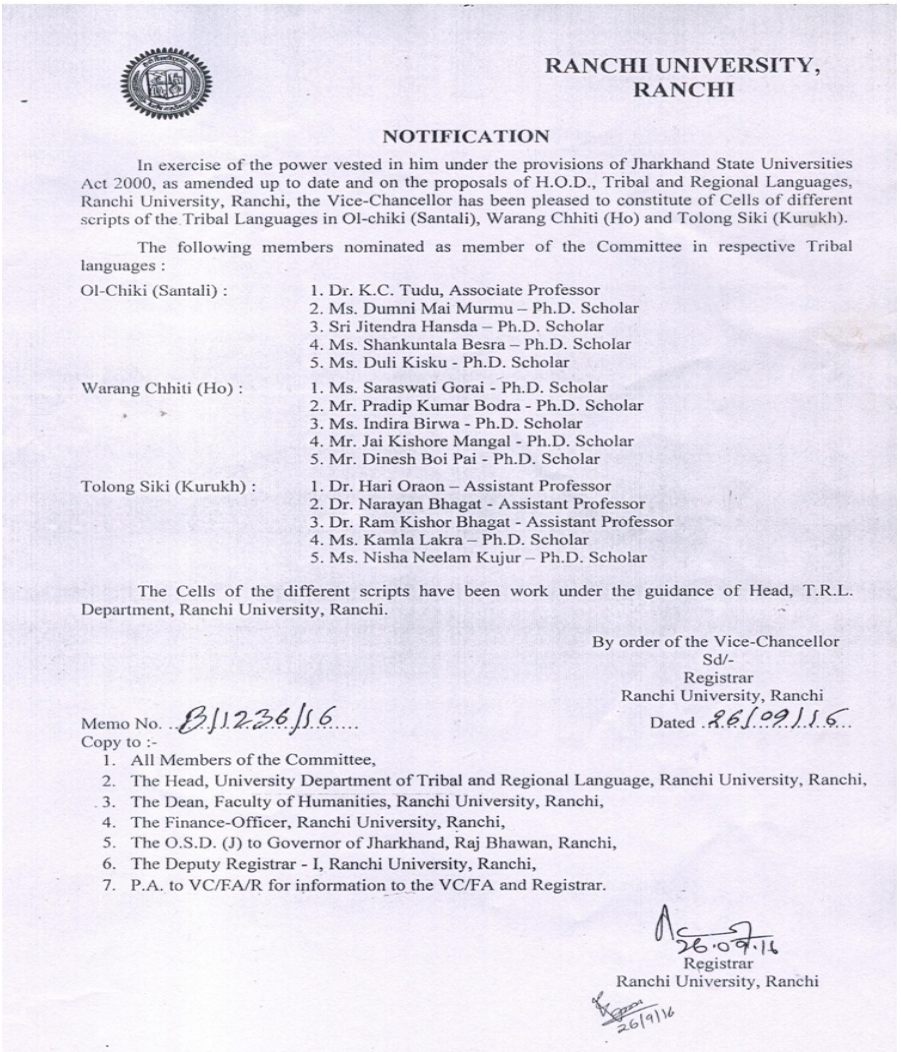

RANCHI UNIVERSITY,
RANCHI

NOTIFICATION

In exercise of the power vested in him under the provisions of Jharkhand State Universities Act 2000, as amended up to date and on the proposals of H.O.D., Tribal and Regional Languages, Ranchi University, Ranchi, the Vice-Chancellor has been pleased to constitute of Cells of different scripts of the Tribal Languages in Ol-chiki (Santali), Warang Chhiti (Ho) and Tolong Siki (Kurukh).

The following members nominated as member of the Committee in respective Tribal languages :

Ol-Chiki (Santali) :
1. Dr. K.C. Tudu, Associate Professor
2. Ms. Dumni Mai Murmu – Ph.D. Scholar
3. Sri Jitendra Hansda – Ph.D. Scholar
4. Ms. Shankuntala Besra – Ph.D. Scholar
5. Ms. Duli Kisku - Ph.D. Scholar

Warang Chhiti (Ho) :
1. Ms. Saraswati Gorai - Ph.D. Scholar
2. Mr. Pradip Kumar Bodra - Ph.D. Scholar
3. Ms. Indira Birwa - Ph.D. Scholar
4. Mr. Jai Kishore Mangal - Ph.D. Scholar
5. Mr. Dinesh Boi Pai - Ph.D. Scholar

Tolong Siki (Kurukh) :
1. Dr. Hari Oraon – Assistant Professor
2. Dr. Narayan Bhagat - Assistant Professor
3. Dr. Ram Kishor Bhagat - Assistant Professor
4. Ms. Kamla Lakra – Ph.D. Scholar
5. Ms. Nisha Neelam Kujur – Ph.D. Scholar

The Cells of the different scripts have been work under the guidance of Head, T.R.L. Department, Ranchi University, Ranchi.

By order of the Vice-Chancellor
Sd/-
Registrar
Ranchi University, Ranchi

Memo No. B/1236/16 Dated 26/09/16

Copy to :-
1. All Members of the Committee,
2. The Head, University Department of Tribal and Regional Language, Ranchi University, Ranchi,
3. The Dean, Faculty of Humanities, Ranchi University, Ranchi,
4. The Finance-Officer, Ranchi University, Ranchi,
5. The O.S.D. (J) to Governor of Jharkhand, Raj Bhawan, Ranchi,
6. The Deputy Registrar - I, Ranchi University, Ranchi,
7. P.A. to VC/FA/R for information to the VC/FA and Registrar.

26.09.16
Registrar
Ranchi University, Ranchi
26/9/16

21- fnukd & 21-10-2016 ½ अलिपुरद्वार जंक्सन (प0बंगाल) में आयोजित तीन दिवसीय कुँड़ुख़ भाषा सम्मेलन के प्रथम दिवस पर कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसायटी ऑफ इंडिया द्वारा डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' को कुँड़ुख़ भाषा की लिपि *तोलोङ सिकि* विकसित किये जाने पर, कुँड़ुख़ भाषा के प्रोन्नति में उनके आजीवन योगदन के लिए **ऑनरेरी फेलोसिप -** 2016 सम्मान से सम्मानित किया गया। समाज की ओर से डॉ0 नारायण उराँव को हार्दिक बधाई।

22- ikjEifjd vkfnoklh vo/kkj.kk vkj i:dfr foKku – जो लताएँ, घडी की दिशा में आरोहित होती हैं, वे औषधी (दवा) के काम आती हैं।

सामान्य तौर दिखता है कि लताएँ घड़ी की विपरीत दिशा में किसी आधार पर उपर चढ़ती हैं। परन्तु जड़ी–बूटी के जानकार आदिवासी ऐसा कहा करते हैं – शिकार खेलने जंगल जा रहे हो। यदि कोई लत्तर बायीं ओर से दायीं ओर (घड़ी की दिशा में) चढ़ा हुआ मिले तो, उसे घर ले आना, वह दवा के काम आता है। तोलोंग सिकि के संस्थापक डॉ0 नारायण उराँव का कहना है मैं पारम्परिक आदिवासी अवधारणा को 25 वर्षों के सामाजिक सह साहित्यिक शोध के दौरान समझ नहीं पाया था, किन्तु दिनांक 23.10.2016, दिन रविवार को श्री राम प्रसाद तिर्की, अलिपुरद्वार (प0 बंगाल), के आंगन में घड़ी की दिशा वाली लता एवं उसका फल देखने का अवसर प्राप्त हुआ। इसका फल दवा के काम आता है या नहीं, यह शोध का विषय है, पर आदिवासी अवधारणा में यह औषधीय गुणवाला है। यह पौधा, सामलोंग, राँची के मिशन स्कूल के कैंपस में भी है। जानकारी मिलने पर डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं फा. अगुस्तिन केरकेट्टा, पौधे के साथ फोटो खिंचवाये।

   ?

[लत्तर, घड़ी की दिशा वाली (In clockwise direction)। फोटो – दायें से श्रीमती मालती तिर्की (उद्यान मालिक), एवं श्री राम प्रसाद तिर्की (सेवानिवृत रेलवे पदाधिकारी), श्री गजेन्द्र उराँव, तोलोंग सिकि के जनक डॉ0 नारायण उराँव ''सैन्दा'', भारतीय रेल के पदाधिकारी श्री मिंज्जु तिर्की।]

23. 16 अक्टुबर 2016 को पडहा धुमकुड़िया चाला अखड़ा (पड़हा अखड़ा) के सहयोग से पडहा धुमकुड़िया कुँड़ुख़ कत्थ लूर'एड़पा, श्री गजेन्दर उराँव *'पड़हा कोटवार'* के नेतृत्व में ग्राम – सैन्दा, थाना – सिसई, जिला – गुमलk dh धुमकुड़िया पिण्डा, छोटका सैन्दा, सिसई, गुमला में धुमकुड़िया एवं लूर'एड़पा (परम्परागत एवं आधुनिक विद्यालय) विषयक कार्यशाला हुई। इस अवसर पर अद्दी अखड़ा कं सचिव श्री जिता उराँव एवं डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' द्वारा उपरोक्त विषय पर प्रशिक्षण दिया गया। इसमें धुमकुड़िया के बच्चे एवं स्थानीय पंच पड़हा प्रतिभागी थे।

24. दिनांक 01 नवम्बर 2016 को अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा) के सहयोग से lkgjkbZ VgMh mYyk ¼lkgjbZ ckgh½ श्री गजेन्दर उराँव *'पड़हा कोटवार'* के नेतृत्व में ग्राम – सैन्दा, थाना – सिसई, जिला – गुमलk dh cykVkxjh में मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि, कुँड़ुख़ पत्रिका की मुख्य सम्पादिका, डॉ0 (श्रीमती) शान्ति ख़लख़ो एवं डॉ0 नारायण उराँव की उपस्थिति में शुभारंभ हुआ। इसमें धुमकुड़िया के बच्चे एवं स्थानीय ग्रामीण सहभागी बने।

25. आई.आई.टी.(आई.एस.एम0) धनबाद (झारखण्ड) के मानविकी संकाय के विभागाध्यक्ष सह भाषाविद डॉ.एम.रहमान को 'बक्कहुही' (द्विमासिक कुँड़ुख़ पत्रिका) भेंट करते हुए डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा'। उतरी द्रविड़ भाषा परिवार की कुँड़ुख़ भाषा में नासिक्य स्वर का होना, इस भाषा की अपनी विशेषता है। कुँड़ुख़ भाषा की यह विशेषता, दक्षिणी द्रविड़ भाषा परिवार (तमिल, तेलगु, मलयालम, कन्नड़ आदि) की भाषाओं में नहीं मिलता है। मानवीय भाषा की सुरक्षा एवं विकास तो होना ही चाहिए।

d¡M¡[k dRFkk gh eyh lj (कुँड़ुख़ भाषा की मूल स्वर स्वर ध्वनियाँ / Primary Vowel)

ᏌᏁᏢᏓᏁ ᏋᏁᏙᏁᏝ / बइता सरह (मौखिक स्वर, Oral vowel)		ᏌᏍᏢᏓᏁ ᏋᏁᏙᏁᏝ / मुँइता सरह (नासिक्य स्वर, Nasal vowel)	
सन्नी सरह (ह्रस्व स्वर, short vowel)	दिगहा सरह (लम्बा स्वर, long vowel)	सन्नी सरह (ह्रस्व स्वर, short vowel)	दिगहा सरह (लम्बा स्वर, long vowel)
Ᵽ - इ, i	Ᵽ: - इः, i:	Ᵽ̃ - इँ, ĩ	Ᵽ̃: - इँः, ĩ:
V - ए, e	V: - एः, e:	Ṽ - एँ, ẽ	Ṽ: - एँः, ẽ:
ỿ - उ, u	ỿ: - उः, u:	ỿ̃ - उँ, ũ	ỿ̃: - उँः, ũ:
ɤ - ओ, o	ɤ: - ओः, o:	ɤ̃ - ओं, õ	ɤ̃: - ओंः, õ:
ו - अ, a	ו: - अः, a:	ו̃ - अँ, ã	ו̃: - अँः, ã:
Π - आ, ā	Π: - आः, ā:	Π̃ - आँ, a÷	Π̃: - आँः, a÷:

d¡M¡[k dRFkk gh tkVBk lj (कुँड़ुख़ भाषा का संयुक्त स्वर / Diphthong) :–

जोट्ठा सरह :–	וᵽ, וỿ, וᏕ, וᏇ, ᵽỿ, ỿᵽ, ו̃ᵽ, ו̃ỿ, ו̃Ꮥ, ו̃Ꮗ, ᵽ̃ỿ, ỿ̃ᵽ. (संयुक्त स्वर)
	अइ, अउ, अय, अव, इउ, उइ, अँइ, अँउ, अँय, अँव, इँउ, उँइ,।

26. अद्दी कुँड़ुख़ चाला धुमकुड़िया पडहा अखड़ा (अद्दी अखड़ा) की ओर से अद्दी अखड़ा प्रकाशन द्वारा =ekfld d¡M¡[k if=dk ^^cDdgqgh** अक्टुबर–दिसम्बर अंक का प्रकाशन। अद्दी अखड़ा प्रकाशन ने पत्रिका का मुख्य सम्पादक, डॉ0 (श्रीमती) शान्ति ख़लख़ो] स्थानीय सम्पादक, श्री विनोद भगत 'हिरही' तथा सह संपादक, श्री महादेव टोप्पो को मनोनित किया गया है।

n’k&Án’k

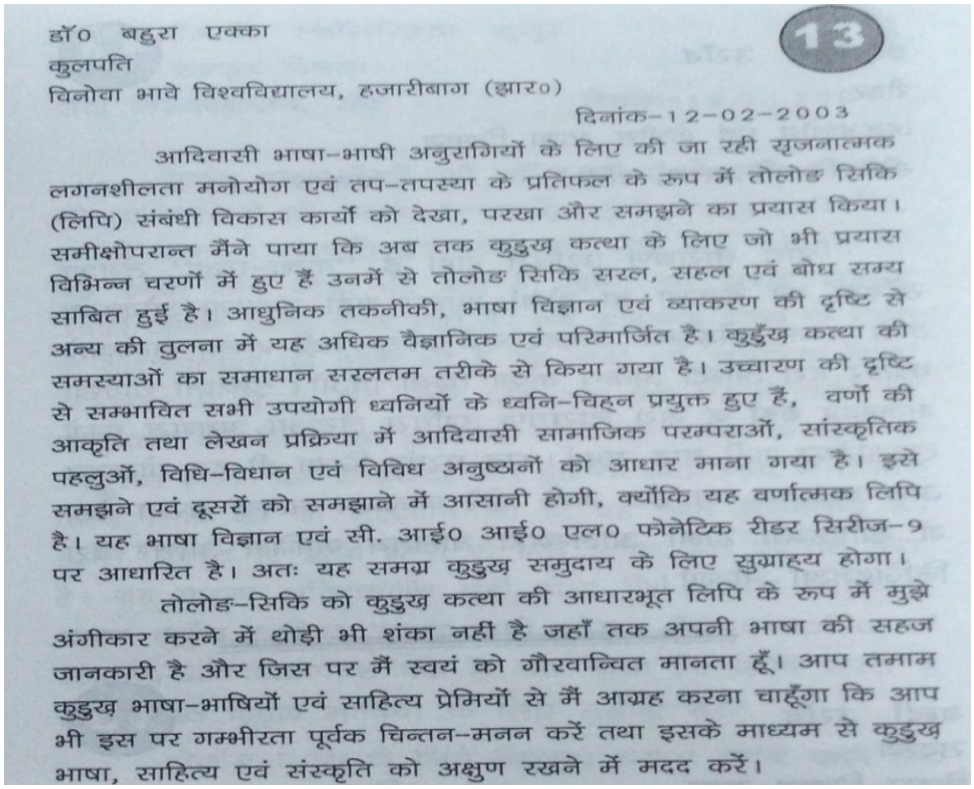

डॉ० बहुरा एक्का
कुलपति
विनोवा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग (झार०)

13

दिनांक–12–02–2003

आदिवासी भाषा–भाषी अनुरागियों के लिए की जा रही सृजनात्मक लगनशीलता मनोयोग एवं तप–तपस्या के प्रतिफल के रूप में तोलोङ सिकि (लिपि) संबंधी विकास कार्यों को देखा, परखा और समझने का प्रयास किया। समीक्षोपरान्त मैंने पाया कि अब तक कुड़ुख़ कत्था के लिए जो भी प्रयास विभिन्न चरणों में हुए हैं उनमें से तोलोङ सिकि सरल, सहल एवं बोध सम्य साबित हुई है। आधुनिक तकनीकी, भाषा विज्ञान एवं व्याकरण की दृष्टि से अन्य की तुलना में यह अधिक वैज्ञानिक एवं परिमार्जित है। कुड़ुँख़ कत्था की समस्याओं का समाधान सरलतम तरीके से किया गया है। उच्चारण की दृष्टि से सम्भावित सभी उपयोगी ध्वनियों के ध्वनि–चिह्न प्रयुक्त हुए हैं, वर्णो की आकृति तथा लेखन प्रक्रिया में आदिवासी सामाजिक परम्पराओं, सांस्कृतिक पहलुओं, विधि–विधान एवं विविध अनुष्ठानों को आधार माना गया है। इसे समझने एवं दूसरों को समझाने में आसानी होगी, क्योंकि यह वर्णात्मक लिपि है। यह भाषा विज्ञान एवं सी. आई० आई० एल० फोनेटिक रीडर सिरीज–9 पर आधारित है। अतः यह समग्र कुड़ुख़ समुदाय के लिए सुग्राह्य होगा।

तोलोङ–सिकि को कुड़ुख़ कत्था की आधारभूत लिपि के रूप में मुझे अंगीकार करने में थोड़ी भी शंका नहीं है जहाँ तक अपनी भाषा की सहज जानकारी है और जिस पर मैं स्वयं को गौरवान्वित मानता हूँ। आप तमाम कुड़ुख़ भाषा–भाषियों एवं साहित्य प्रेमियों से मैं आग्रह करना चाहूँगा कि आप भी इस पर गम्भीरता पूर्वक चिन्तन–मनन करें तथा इसके माध्यम से कुड़ुख़ भाषा, साहित्य एवं संस्कृति को अक्षुण रखने में मदद करें।

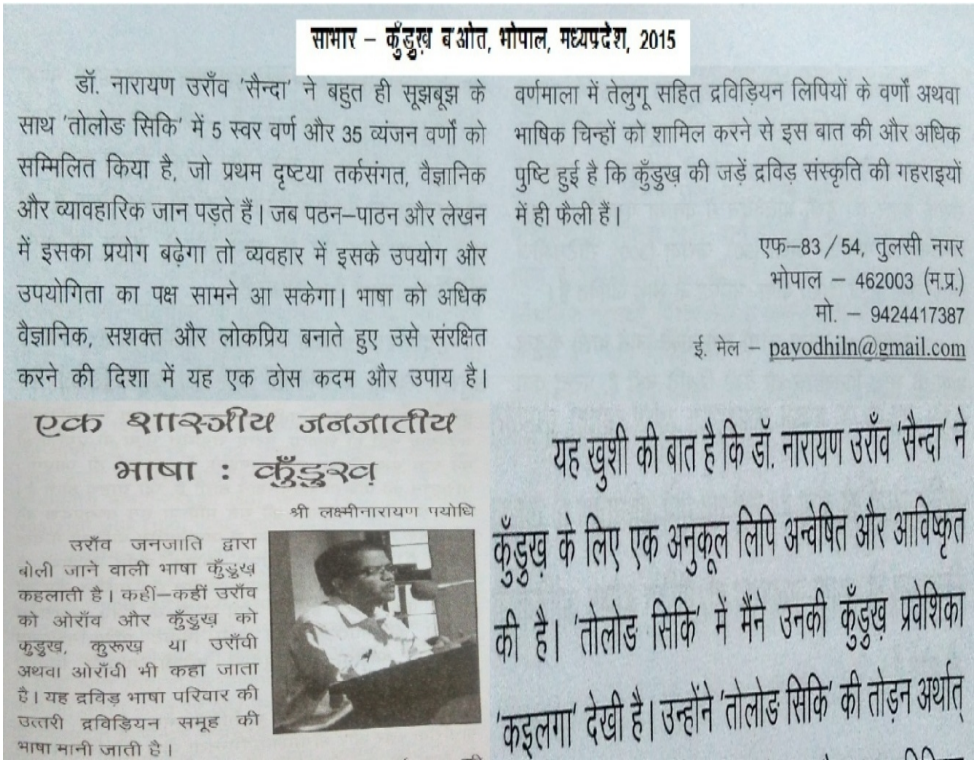

साभार – कुँड़ुख़ बओत, भोपाल, मध्यप्रदेश, 2015

डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' ने बहुत ही सूझबूझ के साथ 'तोलोङ सिकि' में 5 स्वर वर्ण और 35 व्यंजन वर्णों को सम्मिलित किया है, जो प्रथम दृष्टया तर्कसंगत, वैज्ञानिक और व्यावहारिक जान पड़ते हैं। जब पठन–पाठन और लेखन में इसका प्रयोग बढ़ेगा तो व्यवहार में इसके उपयोग और उपयोगिता का पक्ष सामने आ सकेगा। भाषा को अधिक वैज्ञानिक, सशक्त और लोकप्रिय बनाते हुए उसे संरक्षित करने की दिशा में यह एक ठोस कदम और उपाय है। वर्णमाला में तेलुगू सहित द्रविड़ियन लिपियों के वर्णों अथवा भाषिक चिन्हों को शामिल करने से इस बात की और अधिक पुष्टि हुई है कि कुँड़ुख़ की जड़ें द्रविड़ संस्कृति की गहराइयों में ही फैली हैं।

एफ–83 / 54, तुलसी नगर
भोपाल – 462003 (म.प्र.)
मो. – 9424417387
ई. मेल – payodhiln@gmail.com

एक शास्त्रीय जनजातीय भाषा : कुँड़ुख़

श्री लक्ष्मीनारायण पयोधि

उराँव जनजाति द्वारा बोली जाने वाली भाषा कुँड़ुख़ कहलाती है। कहीं–कहीं उराँव को ओरांँव और कुँड़ुख़ को कुड़ुख, कुरूख या उराँवी अथवा ओराँवी भी कहा जाता है। यह द्रविड़ भाषा परिवार की उत्तरी द्रविड़ियन समूह की भाषा मानी जाती है।

यह खुशी की बात है कि डॉ. नारायण उराँव 'सैन्दा' ने कुँड़ुख़ के लिए एक अनुकूल लिपि अन्वेषित और आविष्कृत की है। 'तोलोङ सिकि' में मैंने उनकी कुँड़ुख़ प्रवेशिका 'कइलगा' देखी है। उन्होंने 'तोलोङ सिकि' की तोड़न अर्थात्

n’k&fon’k

01. दिनांक 15–16 दिसम्बर 2012 को ÁFke vUrjk"Vh; dqM+[k Hkk"kk lEesyu] आर्यभट्ट हॉल, राँची विष्वविद्यालय, राँची के सभागार में सम्पन्न। इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में egkefge jkT;iky] >kj[k.M] MkO l;n vgen उपस्थित हुए तथा अमेरिका, स्वीडेन एवं नेपाल देष के कुँड़ुख़ प्रतिनिधि इसमें सम्मिलित हुए।

02. नेपाल देश में अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर नेपाल वासी कुँड़ुख़ भाषा साहित्यकार श्री बेचन उराँव को उनके योगदान के लिए jk"Vª ekrHkk"kk lsok iqjLdkj प्रदान किया गया।

3. दिनांक 16–17 मई 2015 को f}rh; vUrjk"Vh; dqM+[k Hkk"kk lEesyu] विराटनगर, नेपाल में सम्पन्न। इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि usiky ds iwoZ mi iz/kkuea=h mifLFkr थे। नेपाल में भूकम्प के वावजूद, भारत एवं बंगलादेश के कुँड़ुख़ प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

चिकित्सा विज्ञान और समाज शास्त्र

आर्यभट्ट सभागार में सम्मेलन का उद्घाटन करते राज्यपाल.

फोटो : (दाएँ से) राँची विश्वविद्यालय, राँची के कुलपति डा० एल.एन. भगत, विनोवा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग के कुलपति डा० आर.एन. भगत, महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड डा० सैयद अहमद, राँची महानगर की महापौर श्रीमती रमा खलखो

''बच्चा जब जन्म लेता है तब उसकी कोई जुबान (भाषा) नहीं होती है। धीरे–धीरे वह अपनी माँ की जुबान सीखता है। उसके लिए वह अपना सबसे ताकतवर अंग ओठ का इस्तेमाल करता है और सर्वप्रथम ओठ के सटने से निकलने वाली ध्वनि माँ, माई, माय, मम्मी, मॉम, ममा, माता, मदर, मातेर आदि का उच्चारण करता है। बच्चा अपनी माँ से जिस जुबान को सीखता है, वही उसके लिए माँ की भाषा अर्थात mother tongue होती है।''(महामहिम राज्यपाल, झारखण्ड, का दिनांक 15.12.2012 को प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय कुँड़ुख़भाषा सम्मेलन के मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित सम्भाषण सारांश।)

फोटो : राजेन्द्र आयुर्विज्ञान संस्थान (रिम्स), राँची में विभागाध्यक्ष नवजात एवं शिशुरोग विभाग सह नोडल ऑफिसर, एस० सी० एन० यू० (Special Care Newborn Unit), रिम्स, राँची का कार्यालय। बाएँ से प्रभारी परिचारिका ज्योत्सना लकड़ा, एसोसिएट प्रोफेसर डॉ० मिनी रानी अख़ौरी, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ० अरूण कुमार शर्मा तथा डॉ० नारायण उराँव।

नवजात एवं शिशु विशेषज्ञों का मानना है कि एक सामान्य बच्चा अपने माँ–बाप के साथ रहते हुए, जब बोलना आरंभ करता है तो वह सर्वप्रथम, सबसे आसान एक आक्षरिक (Monosyllables) शब्द (मा, बा, पा) 6वें महीने में सीखता है। उसके बाद 9वें महीने में द्वी आक्षरिक (Bisyllables) शब्द तथा 1ले वर्ष में दो शब्द अर्थ सहित सीखता है। प्राकृतिक रूप से बच्चा 'प वर्गीय' शब्द से ही सीखना आरंभ करता हैं। यह इसलिए होता है कि जब बच्चा स्तनपान करता है तो उसके दोनों ओठ सक्रिय और मजबूत बनते हैं और ओठों के सटने से उन्पन्न ध्वनि सीखने में बच्चे के लिए आसान हो जाती है। एक शिशु चिकित्सक के रूप में डॉ० नारायण उराँव ने अपने साहित्यिक शोध में, एक आदिवासी भाषा की लिपि (तोलोङ सिकि) के वर्णमाला को स्थापित करने में इस सिद्धांत को आधार बनाया है, जो विशिष्ट एवं अद्भुत है।

– डॉ० अरूण कुमार शर्मा, दिनांक : 22 जून 2016

KellyTolong Font (Tolong Siki) Keyboard Layout
Designed & Developed by
Mr Kislaya
Esc
F1
F2
F3
F4
F5
F6
F7
F8
F9
F10
F11
F12
Tab
Caps Lock
Shift
Shift
Ctrl
Alt
Space
Alt
Ctrl
तोलोङ सिकि (लिपि) में अंकों (1, 2, 3 ..... 9) के लिए Alt + 0161 से Alt + 0169 तक प्रयोग करें।
जैसे :- Alt + 0161 = ᱡ, Alt + 0162 = ᱢ, Alt + 0163 = ᱣ, ... Alt + 0169 = ᱩ
Full Copyright of KellyTolong Font : Mr Kislaya
kislaya@kislaya.com
Mobile: +91-9431113111
Free Download from NewsWing.com
Concept: Mob No. 9771163804
Dr Naryan Oraon "Sainda"